तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 11, अंक - 12-1, नवंबर-दिसंबर 2022 , मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

विद्यालयों में पहुँच कर, बाँटा सबमें प्यार
बिना हींग बिन फिटकरी, चोखा किया सुधार

इतनी विनती है भगवान

दुष्ट भावों को त्याग कर मैं,
उत्तम भाव को अपनाऊँ।
करूँ प्रणाम नतमस्तक होकर ,
प्रेम सुधा रस बरसाऊँ।

मन में आएँ अशुभ भाव तो,
हो जाता है बड़ा अनर्थ।
कितनी भी कोशिश कर लें हम,
जीवन हो जाता है व्यर्थ ।

चहुँ ओर हम दृष्टि डालें,
फिर संतुलित मन हो करें चिन्तन।
कलह,क्लेश व संघर्ष को ,
जीवन में न होने दें उत्पन्न।

सभी दृष्टिकोणों व अपेक्षाओं से,
नित आदत डालूँ समझने की।
तभी मिलेगी प्रेरणा मुझको ,
जीवन में कुछ करने की।

मैत्री, प्रेम, सहिष्णुता, क्षमा,
ये सब जीवन के शुभ भाव ।
जीवन में सदा सफलता होगी,
यदि न हो इनका कभी अभाव।

कविता
प्राथमिक अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
-सराय अलावर्दी
गुरुग्राम, हरियाणा

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

नवंबर-दिसंबर 2022

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ.अंशज सिंह
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

विवेक कालिया
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,

New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

> हमारे पास दो कान और एक मुँह हैं ताकि हम जितना बोलते हैं उससे दोगुना सुन सकें।
>
> **- एपिक्टेटस**

- पर्यवेक्षण से शिक्षण में सुधार की कवायद 5
- क्यों है शैक्षिक पर्यवेक्षण की आवश्यकता? 14
- किन कोनों में अभी है अँधेरा? 18
- ड्रोन बनाकर नई उड़ान भर रहे हैं स्कूली विद्यार्थी 20
- सेहतः बच्चों के स्वास्थ्य-सुधार का अनूठा कार्यक्रम 22
- सफलता के नित नए आयाम गढ़ता इस्लामनगर का माध्यमिक विद्यालय 24
- खेल-खेल में विज्ञान 28
- सेवानिवृत्ति के बाद भी सेवारत हैं कमला राठी 30
- वैज्ञानिक एवं तार्किक दृष्टिकोण 31
- Allow yourself to listen to your Body 32
- 'Cyber Jagrookta - Safe Use of Internet, Gadgets... 33
- Winsome Vines 35
- Stress Among Teenagers 36
- A Real Hair Raising Tale 39
- Celebrations 41
- Courses After +2 42
- Amazing Facts 48
- General Knowledge Quiz 49

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

पर्यवेक्षण से सुधर रहा है शिक्षण-अधिगम का स्तर

पर्यवेक्षण व्यवस्था सदा से शिक्षण व्यवस्था का एक आवश्यक अंग रही है। इसकी महत्ता सदैव स्वीकार की जाती रही है, लेकिन समय-समय पर इसके स्वरूप में बदलाव आते रहे हैं। परंपरागत पर्यवेक्षण शिक्षक केंद्रित था, तो आधुनिक पर्यवेक्षण शिक्षण, शैक्षिक सामग्री, विधि व छात्र-मूल्यांकन केंद्रित है। पहले आलोचना प्रमुख बात थी तो आज का पर्यवेक्षण सुझावात्मक, सहयोगात्मक व शिक्षक के लिए प्रोत्साहन है। पहले समस्याओं के प्रति अनदेखा रवैया था तो अब समस्या समाधान को प्रमुखता दी जाती है। पहले औचक निरीक्षण में विश्वास रखा जाता था तो अब सुनिश्चित, पूर्वनियोजित व अनौपचारिक पर्यवेक्षण होता है। पहले निरीक्षण का संबंध विद्यालय प्रशासन से था, अब सामुदायिक सहभागिता पर भी ध्यान दिया जाता है। पहले यह आधिकारिक व तनावपूर्ण होता था, तो अब जनतांत्रिक, शंकामुक्त व तनाव रहित होता है। निश्चित तौर पर आधुनिक पर्यवेक्षण के परिणाम वैज्ञानिक, व्यवस्थित, विश्वसनीय और वस्तुनिष्ठ होते हैं।

आधुनिक पर्यवेक्षण के सभी बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए विद्यालय शिक्षा विभाग शिक्षा-दीक्षा शैक्षिक पर्यवेक्षण के कार्यक्रम को चला रहा है। स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की जयंती यानी 11 नवंबर से इस कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। महेंद्रगढ़, गुरुग्राम, मेवात व यमुनानगर जिलों में पर्यवेक्षण कार्यक्रम हो चुका है। एक ही दिन में विभाग के अधिकारी लगभग सौ विद्यालयों का पर्यवेक्षण करके गूगल फॉर्म के माध्यम से अपनी-अपनी रिपोर्ट भेज रहे हैं। कुछ ही समय में सभी आँकड़ों का विश्लेषण करके उसी दिन संध्या के समय जिले की विस्तृत व व्यवस्थित रिपोर्ट जिले के अधिकारियों व विद्यालय मुखियाओं के समक्ष रखी जाती है। उनकी समस्याओं को जाना जाता है तथा शिक्षा-सुधार के कुछ संकल्प लेने के लिए उन्हें प्रेरित किया जाता है।

'शिक्षा सारथी' का यह अंक पर्यवेक्षण विशेषांक है। आपके विचारों व प्रतिक्रियाओं की सदा की भाँति प्रतीक्षा रहेगी।

- संपादक

पर्यवेक्षण से शिक्षण में सुधार की कवायद

डॉ. प्रदीप राठौर

पर्यवेक्षण एक प्रक्रिया है जो किसी परियोजना को बेहतर करने में सहयोग प्रदान करती है। किसी भी विद्यालय के अवलोकन का समग्र लक्ष्य विद्यालय में सीखने की गुणवत्ता में सुधार लाना है। शिक्षा-दीक्षा शैक्षणिक पर्यवेक्षण की प्रक्रिया शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए तैयार की गई है। इसका उद्देश्य साझेदारी बढ़ाना, नवाचार को बढ़ावा देना तथा विद्यालयों व अध्यापकों की बैस्ट प्रैक्टिस को मंच प्रदान करना है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए विभाग ने जिलावार पर्यवेक्षण प्रक्रिया आरंभ की है।

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के दिन पर्यवेक्षण का शुभारंभ-

11 नवंबर को मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की जयंती को देशभर में प्रतिवर्ष 'राष्ट्रीय शिक्षा दिवस' के रूप में मनाया जाता है। वे स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री थे और 1947 से 1958 तक इस पद के दायित्व को सँभाला था। इस दिन राष्ट्र साक्षरता के क्षेत्र में उनके अमूल्य योगदान को कृतज्ञता से याद करता है। विद्यालय शिक्षा विभाग ने पर्यवेक्षण कार्यक्रम के आरंभ के लिए इसी विशेष दिन का चुनाव किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ जिला महेंद्रगढ़ से किया, जब निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, डॉ. अंशज सिंह के मार्गदर्शन में लगभग 100 पर्यवेक्षकों ने एक ही दिन में इतने ही विद्यालयों का पर्यवेक्षण किया। इसके बाद 18 नवंबर को अतिरिक्त मुख्य सचिव, विद्यालय शिक्षा विभाग हरियाणा के नेतृत्व में गुरुग्राम के लगभग सौ विद्यालयों का पर्यवेक्षण हुआ। तीसरे चरण में 9 दिसंबर को मेवात तथा चौथे चरण में 16 दिसंबर को यमुनानगर ज़िलों के विद्यालयों में पर्यवेक्षण हुआ।

पर्यवेक्षण के लिए बनाई गई समय सारिणी

क्रमांक	समय	गतिविधि
1	9:30	प्रार्थना सभा का अवलोकन
2	10:00-10:20	अध्यापकों से कार्यक्रम बारे चर्चा और पर्यवेक्षण के लिए आवश्यक निर्देश
3	10:20-12:00	कक्षावार स्किल पासबुक का अवलोकन, स्किल का मूल्यांकन आदि तथा एफएलएन की प्रगति का पर्यवेक्षण। कक्षा छठी से बारहवीं के संदर्भ में लर्निंग आउटकम का अवलोकन
4	12:00-1:30	अध्यापकों के कक्षा में पढ़ाने के तरीके का अवलोकन, पाठ्यपुस्तकों, कार्य-पुस्तकों तथा अन्य सामग्री का वितरण, मध्याह्नभोजन योजना का पर्यवेक्षण, स्मार्टशाला, बैग-फ्री इंग्लिश मीडियम स्कूल, स्मार्टक्लास रूम, साइंस किट, मैथ्स किट, बाला ग्रांट, अन्य ग्रांट तथा उनसे संबंधित कार्यों का अवलोकन
5	1:30-2:00	एसएमसी सदस्यों, अभिभावकों, स्कूल के साथ जुड़ी अन्य संस्थाओं से चर्चा, दाखिला, पाठ्य-पुस्तकें, विद्यालय विकास पर चर्चा आदि विषय
6	2:00-2:30	स्कूल स्टाफ के साथ चर्चा, सुझाव, उपचार एवं रिपोर्ट लेखन
7	3:30-5:30	अतिरिक्त मुख्य सचिव, निदेशक महोदय की अध्यक्षता में बैठक का आयोजन

पर्यवेक्षण से पहले दिये निर्देश-

विभाग ने पर्यवेक्षण टीम को पर्यवेक्षण से पूर्व विस्तृत रूप से निर्देश दिए। निदेशक महोदय ने स्वयं वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से कहा कि पर्यवेक्षण हेतु आबंटित विद्यालय के बारे में भौतिक जानकारी प्राप्त करें। पर्यवेक्षक सभी संकेतों को सही ढंग से पढ़ लें। पर्यवेक्षण के लिए विभाग द्वारा बनाए गए फॉर्म से भली-भाँति परिचित हो जायें। पर्यवेक्षण का रिकॉर्ड रखने के लिए पर्यवेक्षण पुस्तिका बना लें।

उन्हें निर्देश दिए गए कि पर्यवेक्षण के दिन विद्यालय

मुखिया से मिलकर पूरे दिन की रूपरेखा साझा करें तथा विद्यालय यू-डाइस की एक प्रति प्राप्त कर लें। अपनी डायरी में बिंदुवार सभी गतिविधियों का रिकॉर्ड रखते रहें ताकि पर्यवेक्षण के उपरांत विभाग द्वारा दिए गए फॉर्म में भरने में सुविधा रहे।

यह भी निर्देश दिया गया कि पर्यवेक्षण का आरंभ प्रार्थना-सभा से ही हो। पर्यवेक्षक विद्यालय मुखिया के कक्ष में बैठ कर विद्यालय संबंधी सभी आवश्यक अभिलेखों को प्राप्त कर लें। विद्यालय मुखिया के साथ मिल कर सभी भौतिक संसाधन जैसे कक्षा-कक्ष, खेल का मैदान, प्रयोगशालाओं आदि का अवलोकन करें।

साथ ही यह हिदायत विशेष रूप से दी गई कि पर्यवेक्षण के दौरान विद्यालय की शिक्षण प्रक्रिया में कोई बाधा न हो, यदि पर्यवेक्षक को लगता है कि शिक्षण के दौरान कुछ बताना उचित नहीं है तो कक्षा के बाद संबंधित अध्यापक से संवाद स्थापित करते हुए सुधारात्मक सुझाव दें। इस बात पर विशेष बल दिया गया कि कक्षा कक्ष में विद्यार्थियों के सामने शिक्षक के साथ कोई नकारात्मक टीका-टिप्पणी न की जाए।

पर्यवेक्षण में प्रत्येक संकेतक के लिए ग्रेडिंग की गई है। मध्याह्न भोजन योजना से संबंधित सभी संकेतकों का अवलोकन करने के भी निर्देश दिए गए।

पर्यवेक्षण उपरांत कार्यों संबंधी हिदायतें-

पर्यवेक्षकों को पर्यवेक्षण उपरांत निम्न हिदायतें दी गईं-

पर्यवेक्षण के उपरांत विद्यालय मुखिया को अपना फीडबैक दें। विद्यालय मुखिया, स्टाफ सदस्यों, विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों, कक्षा मॉनिटर के साथ एक बैठक का आयोजन करें। बैठक से जुड़े सभी संकेतकों को अपनी पर्यवेक्षण पुस्तिका में नोट करें। बैठक में शामिल सभी हितधारकों द्वारा दिए गए सुझाव को विशेष रूप से नोट करें। विद्यालय में किये जा रहे अच्छे कार्यों को प्रोत्साहित करें व जहाँ कमी लग रही हो, उसके लिए सुधारात्मक सुझाव दें। पर्यवेक्षण का सम्पूर्ण रिकॉर्ड विभाग द्वारा दिए गए फॉर्म पर अपलोड करें। यदि आवश्यक हो तो किसी तकनीकी विशेषज्ञ की सहायता ले सकते हैं। अगर विद्यालय में किसी कारणवश गूगल फॉर्म पर डाटा अपलोड नहीं हुआ तो चयनित खंड मुख्यालय पर उपलब्ध तकनीकी टीम की सहायता से डाटा अपलोड सुनिश्चित किया जाए।

पर्यवेक्षण से पहले विद्यालय मुखिया/प्रभारी क्या करें?

राज्य मुख्यालय द्वारा पर्यवेक्षण से संबंधित दिया

पर्यवेक्षणः एक रचनात्मक और गतिशील प्रक्रिया

पर्यवेक्षण एक रचनात्मक और गतिशील प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य शिक्षकों और विद्यार्थियों को शिक्षा के वांछित लक्ष्य की सिद्धि के लिए शिक्षण अधिगम स्थिति में सुधार लाने के लिए अनुकूल मार्गदर्शन और दिशा देना होता है। गुणवत्ता शिक्षा प्रक्रिया में पर्यवेक्षण का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। एक अच्छा पर्यवेक्षण हमेशा शिक्षकों के विकास, लोगों के उत्थान और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सुधार से जुड़ा होता है।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए माननीय मुख्यमंत्री महोदय की प्रेरणा से पर्यवेक्षण की एक व्यापक योजना बनाई गई है। विद्यालय शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ.महावीर सिंह के दिशा-निर्देशन में उनकी पूरी टीम शुक्रवार के दिन एक-एक ज़िले में जाकर पर्यवेक्षण कार्य कर रही है। इस पर्यवेक्षण की एक विशेष बात यह है कि यह औचक नहीं है, इसकी पूर्व सूचना संबंधित जिले और उसके विद्यालयों को दी जा रही है, ताकि वे पहले से इसके लिए मानसिक रूप से तैयार रहें। उसी दिन सायंकाल में जिले के सभी अधिकारियों के समक्ष जिले के विद्यालयों की रिपोर्ट रखी जाती है। केवल कमियों की ओर ही इंगित नहीं किया जाता, बल्कि श्रेष्ठ कार्यों की सराहना भी होती है। मेरा विश्वास है कि यह कार्यक्रम शिक्षण के स्तर को बढ़ाने में मददगार बनेगा।

कँवरपाल
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

किन बिन्दुओं पर बल दे रहे हैं अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय

गुरुग्राम, नूँह और यमुनानगर ज़िलों में पर्यवेक्षण के बाद संध्याकाल बैठकें माननीय अतिरिक्त मुख्य सचिव, महोदय की अध्यक्षता में हुई। इनमें उनके वक्तव्य में निम्न बिंदु शामिल रहे-

1. सभी प्रकार की प्रयोगशालाएँ कार्यात्मक होनी चाहिए और प्रत्येक प्रयोगशाला में एक रजिस्टर होना चाहिए जिसमें कक्षा, तिथि, प्रयोग और शिक्षक का डेटा दिखाया गया हो ।
2. पुस्तकालय की किताबें नियमित आधार पर जारी की जानी चाहियें ताकि विद्यार्थियों में स्वाध्याय की आदत विकसित हो। दी गई पुस्तकों का बाकायदा रिकॉर्ड रखा जाना चाहिए।
3. शिक्षकों के पास विस्तृत दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पाठ योजना दर्शाने वाली शिक्षक डायरी होनी चाहिए।
4. कक्षाओं में प्रिंट समृद्ध वातावरण होना चाहिए और शिक्षकों को टीएलएम और टीएलई का उपयोग करना चाहिए।
5. ब्लैक/ग्रीन/व्हाइट बोर्ड को कक्षा में ठीक से इस्तेमाल किया जाना चाहिए और उस पर तारीख, कुल छात्र/उपस्थित छात्रों और शिक्षक द्वारा पढ़ाए जाने वाले अध्याय को प्रदर्शित किया जाना चाहिए।
6. शिक्षा अधिकारी/क्लस्टर प्रमुख / बीआरसी /बीआरपी /डाइट फैकल्टी, जब वे स्कूलों का दौरा करते हैं, तो उन्हें विज़िटिंग रजिस्टर पर फीडबैक दर्ज करना चाहिए।
7. टेबलेट का उचित उपयोग होना चाहिए और शिक्षक को टैबलेट के माध्यम से कक्षा की प्रगति पर नज़र रखनी चाहिए।
8. एसएमसी बैठकें और पीटीएम रिकॉर्ड हर महीने अपडेट किए जाने चाहिए।
9. प्रत्येक कक्षा में कक्षा शिक्षक का फोटो अवश्य लगा होना चाहिये।
10. पीआरटी को उन गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जिन्हें उन्होंने एफएलएन प्रशिक्षण के दौरान पहले ही अनुभव किया है।
11. कार्यपुस्तिकाओं और शिक्षक मार्गदर्शिकाओं का ठीक से उपयोग किया जाना चाहिए और मूल्यांकन का रिकॉर्ड बनाए रखा जाना चाहिए।
12. शिक्षण उद्देश्य के लिए लगाये गये डिजिटल बोर्ड नियमित रूप से उपयोग में होने चाहिए।

जाने वाला प्रशिक्षण प्राप्त करें। स्टाफ सहित सुबह जल्दी विद्यालय में पहुँचना सुनिश्चित करें। पर्यवेक्षण तिथि के दिन विद्यालय विद्यार्थियों के लिए सुबह 9:30 बजे से शुरू होगा। विद्यालय के सभी अभिलेखों से संबंधित / अन्य अपूर्ण कार्य पर्यवेक्षण तिथि से पूर्व पूरा करें। अपने अन्तर्गत आने वाले अध्यापकों व कर्मचारियों को सभी कार्य पूर्ण करने हेतु निर्देशित करें। यू-डाइस रिपोर्ट कार्ड की प्रति अपने संकुल समन्वयक (सीआरसी) से प्राप्त कर पर्यवेक्षक को देने हेतु तैयार रखें। विद्यालय के सभी प्रकार के अभिलेख एवं दस्तावेज तैयार रखें ताकि पर्यवेक्षक को अवलोकन के दौरान तुरंत उपलब्ध करवाए जा सकें। अपने विद्यालय के कक्षा-कक्ष, विद्यालय प्रांगण, एमडीएम किचन, प्रयोगशालाओं, पुस्तकालय इत्यादि की साफ-सफाई, साज-सज्जा के लिए सभी कार्य पूर्ण करें। अपने विद्यालय की सभी प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय व अन्य कक्ष अवलोकन हेतु खुले रखें। पर्यवेक्षण से कम से कम एक दिन पहले विद्यालय प्रबंधन समिति, माता-पिता और अभिभावकों को पर्यवेक्षण वाले दिन होने वाली बैठक के बारे में लिखित में दें।

पर्यवेक्षण के दौरान विद्यालय मुखिया/प्रभारी क्या करें?

अध्यापकों व विद्यार्थियों से संवाद स्थापित करते हुए पर्यवेक्षण के कार्य में पर्यवेक्षक का दिशानिर्देश अनुसार सहयोग करें। पर्यवेक्षक द्वारा किसी भी प्रकार का विद्यालय से संबंधित अभिलेख/दस्तावेज की माँग करने पर तुरंत उपलब्ध करवाएँ। पर्यवेक्षक को सभी कक्षा-कक्षों, अन्य कक्षों, पुस्तकालय, प्रयोगशालाओं, मिड-डे मील किचन व व्यवस्था और विद्यालय प्रांगण का

अवलोकन करवाएँ। संबंधित कक्षा प्रभारियों को निर्देशित करें कि वह पर्यवेक्षक के साथ कक्षा-कक्ष गतिविधियों के अवलोकन के दौरान सहयोग करें। पर्यवेक्षण संबंधित संपूर्ण डाटा को विभाग द्वारा प्रदान किए गए फ़ार्म में अपलोड करने में पर्यवेक्षक की सहायता हेतु विद्यालय सिम, कंप्यूटर अध्यापक या किसी अन्य अध्यापक को निर्देशित करें।

पर्यवेक्षण के उपरान्त विद्यालय मुखिया/प्रभारी क्या करें?

पर्यवेक्षण का कार्य पूर्ण होने के बाद विद्यालय मुखिया अपने अध्यापकों एवं विद्यालय प्रबंधन समिति के सभी सदस्यों के साथ एक साझा बैठक करें तथा विद्यालय के सुधारात्मक पक्षों पर विचार विमर्श करें।

पर्यवेक्षण से पहले जिला/ खंड अधिकारी क्या करें?

उपरोक्त अधिकारीगण चयनित खंड के खंड शिक्षा अधिकारी एवं स्कूल मुखियाओं से शिक्षा-दीक्षा शैक्षणिक पर्यवेक्षण हेतु बैठक करें। इस बैठक में सभी स्कूल-मुखियागण को पर्यवेक्षण सम्बन्धी सभी बिंदुओं पर अवगत कराएँ व संबंधित तैयारी एवं प्रबंधन करने के लिए कहें -

विद्यालय के भौतिक संसाधन की साफ़-सफाई व व्यवस्था, विद्यालय के मानवीय संसाधन से जुड़े सभी रिकॉर्ड की उपलब्धता, कक्षा-कक्ष वातावरण : शैक्षणिक गतिविधियों, टीएलएम/टीएलई इत्यादि की सुचारु व्यवस्था, विद्यार्थी आकलन : स्किल पासबुक, विद्यार्थी आकलन परीक्षा से जुड़े सभी रिकॉर्ड की उपलब्धता,

आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान (एफएलएन) की तैयारी, उड़ान कार्यक्रम की तैयारी, आउट ऑफ स्कूल चिल्ड्रन तथा ड्रॉप-आउट हुए बच्चों से जुड़े सभी रिकॉर्ड की उपलब्धता, विद्यालय प्रबंधन समिति की भागीदारी व उससे जुड़ी सभी रिकॉर्ड की उपलब्धता, सभी लैब व कंप्यूटर रूम में साफ़-सफाई व सुचारु व्यवस्था, बच्चों को दिए गए टेबलेट का सही प्रकार से इस्तेमाल व इससे जुड़े सभी रिकॉर्ड की उपलब्धता, अध्यापक अभिभावक बैठक के आयोजन की विस्तृत जानकारी व सभी रिकॉर्ड की उपलब्धता, मध्याह्न भोजन योजना की सुचारु व्यवस्था, विद्यालय स्वच्छता एवं साज-सज्जा, यू-डाइस के सभी प्रकार के अभिलेख/दस्तावेज की उपलब्धता,

पर्यवेक्षण के लिए स्कूल मुखियाओं को समुचित प्रशिक्षण प्रदान करें, खंड शिक्षा अधिकारी द्वारा पर्यवेक्षकों को आवंटित विद्यालयों के लिए जाने और वापस आने हेतु निर्धारित समय अनुसार रूट चार्ट तैयार रखें। खंड शिक्षा अधिकारी संकुल समन्वयक (CRC)की सहायता से पर्यवेक्षक को चयनित खंड मुख्यालय से आबंटित विद्यालय तथा पर्यवेक्षण उपरांत आंबटित विद्यालय से खंड मुख्यालय तक के सामूहिक यातायात का प्रबंधन करें ताकि पर्यवेक्षक विद्यालय में प्रातः 9:15 तक उपस्थित हो सके। खंड शिक्षा अधिकारी पर्यवेक्षक को आबंटित विद्यालय की यू-डाइस की प्रति उपलब्ध करवाएँ, खंड मुख्यालय पर सिम, कंप्यूटर टीचर/वोकेशनल टीचर/ पीजीटी कंप्यूटर साइंस/आईटी इंचार्ज की उपलब्धता सुनिश्चित करें ताकि आवश्यकता अनुसार रिपोर्ट, आँकड़ों को समय पर संबंधित फार्म पर ऑनलाइन किया जा सके।

पर्यवेक्षण के दौरान जिला/ खंड अधिकारी क्या करें?

उपरोक्त अधिकारी सुनिश्चित करें कि उनके जिले के चयनित खंड के सभी विद्यालयों में पर्यवेक्षकों को पहुँचने में कोई परेशानी न हो। यदि कोई पर्यवेक्षक उनसे पर्यवेक्षण से सम्बंधित समस्या बताता है, उनकी समस्या का समाधान करें। ये सभी अधिकारी खंड के क्लस्टर की बाँट करके आबंटित क्लस्टर के 3-3 विद्यालयों का दौरा करें तथा सुनिश्चित करें कि पर्यवेक्षण का कार्यक्रम सुचारु रूप से चल रहा हो।

पर्यवेक्षण के उपरान्त जिला/ खंड अधिकारी क्या करें?

सभी विद्यालय मुखियाओं से उनके विद्यालय में शैक्षणिक पर्यवेक्षण के सफलतापूर्वक सम्पन्न हो जाने

की सूचना प्राप्त करें। सभी पर्यवेक्षकों का चयनित विद्यालयों से चयनित खंड-मुख्यालय पहुँचना सुनिश्चित करें। सभी पर्यवेक्षकों द्वारा निर्धारित फ़ार्म पर पर्यवेक्षण से संबंधित आँकड़े अपलोड करवाना सुनिश्चित करें। यदि किसी पर्यवेक्षक को डेटा अपलोड में समस्या आ रही है तो खंड-मुख्यालय पर उपलब्ध तकनीकी सहायक को सम्बंधित पर्यवेक्षक की सहायता करने को निर्देशित करें। सभी कार्य पूर्ण होने के उपरांत राज्य-मुख्यालय को रिपोर्ट भेजें।

महेंद्रगढ़ के सौ विद्यालयों से हुई शुरूआत-

महेंद्रगढ़ जिले में 11 नवंबर को करीब 100 वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में मैराथन मॉनीटरिंग की गई। पंचकूला से निदेशक सेकेंडरी स्कूल शिक्षा विभाग डॉ. अंशज सिंह के नेतृत्व में सभी विभागीय एचसीएस और दूसरे करीब 100 अधिकारियों ने इन स्कूलों में विभाग की ओर से चलाई जा रही एफएलएन, स्किल पासबुक, स्मार्ट क्लास रूम, विभाग की ओर से दी जाने वाली ग्रांट के बारे में बारीकी से जाँच की।

शिक्षा दीक्षा शैक्षणिक पर्यवेक्षण के बारे में विभागीय प्रवक्ता ने बताया कि निरीक्षण के दौरान अधिकतर स्कूलों में पढ़ाई का स्तर सही पाया गया, लेकिन ज्यादातर शिक्षक पुरानी पद्धति से ही शिक्षण कार्य कर रहे थे। डॉ. अंशज सिंह ने शिक्षकों को किताबी ज्ञान से हटकर नई तकनीक से पढ़ाने का सुझाव दिया। उन्होंने पढ़ाई को रुचिकर बनाने के लिए शिक्षकों को नई तकनीक और नई शिक्षा नीति अपनाने की जरूरत पर बल दिया। डॉ. अंशज सिंह ने स्कूलों में विद्यालय प्रबंधन समिति को केवल सिविल कार्यों की बजाय बच्चों की पढ़ाई पर फोकस करने की अपील की। उन्होंने डीईओ और डीपीसी को भी स्कूलों में शिक्षा के स्तर को बेहतर बनाने के

निर्देश दिए। उन्होंने महेंद्रगढ़ के जिला शिक्षा अधिकारी सुनील दत्त और स्कूल मुखियाओं को शिक्षा बेहतरी के लिए जल्द ठोस और विस्तृत योजना बनाकर मुख्यालय रिपोर्ट करने को कहा।

पर्यवेक्षक टीम और शिक्षकों के साथ वार्ता में निदेशक डॉ. अंशज सिंह ने ई-अधिगम यानी टैबलेट के ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करने के निर्देश दिए। इसके साथ ही सभी स्कूलों में साइंस लैब को दुरुस्त करने और उनके सही इस्तेमाल करने की बात कही। डॉ. अंशज सिंह ने स्कूल में प्रार्थना सभा से लेकर छुट्टी होने तक प्राचार्य, शिक्षक, एसएमसी और बच्चों से संवाद किया और उनसे उनकी जरूरतों और परेशानियों के बारे में भी जाना। उन्होंने कहा कि किसी भी स्कूल को अगर किसी तरह के बजट या अन्य शिक्षण संबंधी कोई जरूरत है तो

जब एसीएस महोदय बन गए 'शिक्षक'

18 नवंबर को विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. महावीर सिंह जब गुरुग्राम के नवादा फतेहपुर विद्यालय की चौथी कक्षा में पहुँचे, तो उस समय प्राथमिक शिक्षिका विद्यार्थियों को डिजिटल बोर्ड पर श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों को समझा रही थीं। बोर्ड पर सेर-सैर, मेला-मैला, बेल-बैल, में-मैं आदि शब्द लिखकर वाक्यों में उनका प्रयोग कर रही थीं।

जैसे ही पीछे के द्वार से डॉ. सिंह अपनी टीम के साथ कक्षा-कक्ष में पधारे तो सभी बच्चों ने खड़े होकर उनका अभिवादन किया। वे पीछे रखी कुर्सियों पर बैठ गए और ध्यान से शिक्षिका की बात को सुनने लगे। शिक्षिका मनोयोग से शिक्षण-कर्म में लीन रही। बच्चे खामोशी से बैठे सुन रहे थे। बीच-बीच में कुछ उत्सुकतावश गर्दन घुमाकर पीछे बैठे 'अजनबियों' को देख रहे थे। कक्षा-कक्ष का गंभीर वातावरण व विद्यार्थियों की खामोशी इंगित कर रही थी कि संभवतः उन्हें ऐसे निर्देश दिए गए होंगे कि विभाग के उच्चाधिकारी के सम्मुख 'कड़े अनुशासन' का परिचय दिया जाए।

अध्यापिका ने अपनी बात समाप्त की, तो श्री सिंह ने अपनी बात शुरू की। उन्होंने बच्चों से कहा कि जिस प्रकार वाक्य अध्यापिका ने बनाए हैं, वैसे ही कुछ नये वाक्य में स्वयं बनाकर मुझे दिखायें।

अब कक्षा का माहौल कुछ 'ढीला' पड़ा। बिना निर्देश दिए ही बच्चों ने अपने मुँह पीछे को मोड़ लिये। खामोश बैठे बच्चे चहक उठे। अपनी-अपनी कॉपियाँ लेकर महोदय को अपने-अपने लिखे वाक्य दिखाने लगे। कुछ उत्साही बच्चे दूसरों को धकेलते हुए खुद आगे बढ़ आए। जल्दी ही उनके चारों ओर बच्चों का जमघट हो गया।

'देखो बच्चे, तुमने इस शब्द में अनुस्वार लगाया है, जबकि अनुनासिक का प्रयोग होना चाहिए था.. तुमने 'इ' की मात्रा सही नहीं लगाई ...शाबाश! तुम्हारे तो सभी वाक्य सही हैं।' डॉ. सिंह ने कुछ ही पलों में बच्चों के साथ आत्मीयता का संबंध स्थापित कर लिया।

इसके बाद जब उन्होंने बच्चों को अपने-अपने स्थानों पर बैठने के लिए कहा, तब नन्ही रीतिका कहने लगी- 'सर! मेरी कॉपी तो आपने देखी ही नहीं।' तभी रमेश बोल पड़ा- इसने विद्यालय शब्द मेरी कॉपी से नकल करके सही किया है सर।'

डॉ. सिंह जब मंद-मंद मुस्कराते हुए बालकों के इस निश्छल वार्तालाप व वाद-विवाद का आनंद ले रहे थे, तब महसूस हुआ कि एक आदर्श अध्यापक अपने व्यक्तित्व व अध्यापन कौशल से पल भर में कक्षा के वातावरण को बदल कर किस प्रकार अधिगम प्रक्रिया को सहज बना देता है।

कक्षा के अंत में प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक ने बच्चों से पूछा- क्या आप चाहेंगे कि आपके ये 'नये शिक्षक' हर रोज़ आपको पढ़ाएँ? इसकी प्रतिक्रिया में जब सभी बच्चों ने समवेत स्वर में 'हाँजी सर' कहकर हामी भरी, तब डॉ.सिंह के चेहरे पर मुस्कराहट तैर गई।

-डॉ. प्रदीप राठौर

विभाग उसे पूरा करेगा। शिक्षक केवल बच्चों को पढ़ाने में अपनी ऊर्जा लगाएँ। महेंद्रगढ़ में पर्यवेक्षण के बाद जिले के सभागार में शिक्षकों के साथ एक संवाद कार्यक्रम भी रखा गया, जिसमें शिक्षा विभाग के अधिकारियों के अलावा जिला उपायुक्त भी मौजूद रहे। उन्होंने भी जिले के स्कूलों में हरसंभव मदद का आश्वासन दिया।

दूसरे चरण के लिए चुना गया गुरुग्राम-

शिक्षा दीक्षा शैक्षणिक पर्यवेक्षण के दूसरे चरण में विभाग के अधिकारियों ने अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. महावीर सिंह के नेतृत्व में गुरुग्राम के करीब 100 स्कूलों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान 2,296 शिक्षक और 77,593 छात्रों से संबंधित शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक योजनाओं को बारीकी से जाँचा गया। निरीक्षण में सभी सीनियर सेकेंडरी, सभी मॉडल संस्कृति सीनियर सेकेंडरी स्कूल के अलावा कुछ प्राइमरी स्कूलों को भी शामिल किया गया। निरीक्षण के दौरान निम्न चीजें देखी गईं-

स्कूलों के सिविल कार्यों की प्रगति, स्मार्ट क्लास रूम की स्थिति एवं सुविधाएँ, सभी विद्यार्थियों की स्किल पास बुक, स्कूलों में मिड-डे मील की क्वालिटी, एफएलएन के तहत चलने वाले कार्यक्रमों की प्रोग्रेस रिपोर्ट, ई-अधिगम के तहत वितरित किए गए टेबलेट/सिम-कार्ड/पीएएल सॉफ्टवेयर, पुस्तक वितरण, विद्यालयों को पूर्व में दी गई ग्रांट से क्या कार्य करवाए गए, कितनी ग्रांट खर्च की गई, सभी विद्यार्थियों की सभी कापियाँ चैक हों, विद्यालय परिसर, कक्षाओं, प्रयोगशालाओं व शौचालयों आदि की सफाई, प्रातःकालीन सभा में प्रार्थना, आज का विचार, हाजिरी, योग, समाचार, राष्ट्रगान आदि प्रतिदिन हो रहे हैं, स्कूलों में 1 अप्रैल, 2022 से काटी गई एसएलसी और नाम कटने वाले विद्यार्थियों का लिखित ब्यौरा कारण सहित संकलित किया जाए, कक्षाओं में टीएलएम और टीएलई का प्रयोग कक्षाओं में हो रहा हो, विद्यालय का टाइम टेबल (उड़ान कार्यक्रम के अनुसार) विद्यार्थियों के सूचनापट्ट, ऑफिस और पर्यवेक्षक की फाइल में रख लिया है, मोबाइल टेबलेट का रिकार्ड पूरा है, आदि।

स्कूलों की मॉनिटरिंग के बाद शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ महावीर सिंह ने जिले के सभी अधिकारियों, मुखियाओं और शिक्षकों को स्कूलों में छात्रों के ड्रॉप आउट, स्कूलों में छात्रों की उपस्थिति और छात्रों के परीक्षा परिणाम को बेहतर करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि शिक्षक का कार्य केवल नौकरी के लिए नहीं है, बल्कि समाज के पिछड़े वर्ग को आगे लाना और समाज सेवा करना भी है। निरीक्षण के बाद गुरुग्राम, सेक्टर-49 में शिक्षा विभाग के अधिकारियों और पर्यवेक्षण टीम के सभी सदस्यों की मीटिंग बुलाई गई जिसमें गुरुग्राम के जिला उपायुक्त श्री नितिन यादव भी मौजूद रहे। शिक्षकों को सम्बोधित करते हुए उपायुक्त नितिन यादव ने शिक्षा विभाग के अधिकारियों और शिक्षकों को स्कूलों से सम्बंधित हर सम्भव सहयोग का आश्वासन दिया।

तीसरे चरण का पर्यवेक्षण नूँह में-

9 नवंबर को पर्यवेक्षण के लिए ज़िला नूँह चुना गया, जिस दिन अट्टा बारोटा के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ.महावीर सिंह स्वयं उपस्थित रहे। शिक्षा विभाग के 150 अधिकारियों की टीम ने मेवात के 143 स्कूलों का दौरा किया। स्कूल शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. महावीर सिंह के नेतृत्व में मुख्यालय के अधिकारियों और जिला स्तर के अधिकारियों की पूरी टीम मेवात के अलग अलग ब्लॉक और गाँव के स्कूलों में मॉनिटरिंग के लिए पहुँचीं। अतिरिक्त मुख्य सचिव ने अट्टा बरोटा स्कूल में पूरा दिन सुबह 9:30 से लेकर शाम 3:30 बजे तक स्कूल में शैक्षणिक और सिविल कार्यों का जायजा लिया। उन्होंने छात्र-छात्राओं, शिक्षकों और एसएमसी सदस्यों से विद्यालय से जुड़े हर पहलू पर चर्चा की और विभाग की ओर से बच्चों को दी जाने वाली सभी सुविधाओं का बारीकी से जायजा लिया। डॉ. महावीर सिंह ने सभी जिला शिक्षा अधिकारियों और शिक्षकों को दसवीं कक्षा का परीक्षा परिणाम पिछले वर्ष के मुकाबले 20 फीसदी और बढाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मेवात की शिक्षा धरातल पर लाना जरूरी है और इसके लिए कड़ाई से परिश्रम करने की जरूरत है। डॉ. सिंह ने कहा कि स्कूलों में अध्यापकों की कमी को प्राथमिकता के तौर पर पूरा किया जा रहा है। 500 से ज्यादा शिक्षा सहायक भी लगाए गए हैं ताकि शिक्षा का स्तर बेहतर हो सके।

चौथा चरणः ज़िला यमुनानगर-

शिक्षा दीक्षा शैक्षणिक पर्यवेक्षण के चौथे चरण में शिक्षा विभाग के मुख्यालय से व विभिन्न जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों से 111 अधिकारियों की टीम ने शुक्रवार को यमुनानगर के 111 स्कूलों का दौरा किया। स्कूल शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. महावीर सिंह एवं निदेशक डॉ. अंशज सिंह के नेतृत्व में मुख्यालय के अधिकारियों और जिला स्तर के अधिकारियों की पूरी टीम यमुनानगर के अलग-अलग खंडों के विद्यालयों में मोनिटरिंग के लिए पहुँची।

इस दौरान अतिरिक्त मुख्य सचिव ने कलावड़ स्कूल सरस्वती नगर और निदेशक डॉ. अंशज सिंह ने जगाधरी स्कूल का दौरा किया और सुबह से लेकर शाम तक स्कूल में शैक्षणिक और सिविल-कार्यों का जायजा लिया। उनके कम्प्यूटर लैब, साइंस लैब, लाइब्रेरी, स्टेम लैब, साइंस किट, टेबलेट के इस्तेमाल और मिड-डे-मील की बारीकी से जाँच की। स्कूलों में निपुण हरियाणा- निपुण भारत के तहत चलाये जा रहे एफएलएन कार्यक्रमों और ट्रेनिंग के बारे में भी जानकारी ली। उन्होंने स्कूल में छात्र-छात्राओं, शिक्षकों और एसएमसी सदस्यों से विद्यालय से जुड़े हर पहलू पर चर्चा की और विभाग की ओर से बच्चों को दी जाने वाली सभी सुविधाओं का बारीकी से जायजा लिया। डॉ. महावीर सिंह ने जिला के सभी शिक्षा अधिकारियों और शिक्षकों को दसवीं कक्षा का परीक्षा परिणाम पिछले वर्ष के मुकाबले 20 से 25 फीसदी और बढाने के निर्देश दिए।

मुख्यालय से एचसीएस स्तर से लेकर कार्यक्रम अधिकारी और जिलों में डाइट के शिक्षक और दूसरे जिला स्तर के अधिकारी स्कूलों में सुबह से लेकर शाम तक रहे। पूरे दिन के पर्यवेक्षण के बाद सभी पर्यवेक्षण अधिकारियों ने डीएवी कन्या महाविद्यालय के सभागार में अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. महावीर सिंह एवं निदेशक महोदय डॉ. अंशज सिंह के साथ अपने अनुभव साँझा किये। इस दौरान यमुनानगर के उपायुक्त राहुल हुडा ने सभी अधिकारियों का धन्यवाद करते हुए कहा कि जिला यमुनानगर विभागीय कार्ययोजना को धरातलीय स्तर पर लागू करने और शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए तत्पर है।

कॉलेज के सभागार में शिक्षकों को सम्बोधित करते हुए अतिरिक्त मुख्य सचिव ने यमुनानगर में शिक्षा के स्तर को बेहतर करने और विशेषकर लड़कियों की स्कूलों में उपस्थिति और स्कूलों में ड्रॉपआउट रोकने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि स्कूलों में बच्चे खुशनुमा और अच्छे माहौल में पढ़ें और लर्निंग लेवल अच्छा हो, यही विभाग की प्राथमिकता है। उन्होंने दसवीं का परिणाम 20 से 25 फीसदी और बढ़ाने, छात्रों के ड्रॉपआउट को जीरो करने और लड़कियों की उपस्थिति को शतप्रतिशत करने पर फोकस करने के निर्देश दिए।

drpradeeprathore@gmail.com

शैक्षिक पर्यवेक्षणः एक सहयोगात्मक प्रक्रिया

शिक्षा के क्षेत्र में प्रभावी शिक्षण विधियों, पाठ्येतर क्रिया-कलापों को विद्यालयों में किस प्रकार से नियोजित किया जाए तथा शिक्षा के स्तर को गुणात्मकता की ओर किस प्रकार अग्रसर किया जाए आदि उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शैक्षिक पर्यवेक्षण अत्यधिक लाभकारी है। विद्यार्थियों व शिक्षकों की समस्याओं को जानने, विद्यालय प्रबंधन समितियों को सामुदायिक स्रोतों को अपनाकर शिक्षा के स्तर का उन्नयन करने के लिए प्रेरित करने, सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण में परिवर्तन लाने, शैक्षिक माहौल को ज़मीनी स्तर पर जाकर जानने के लिए,भौतिक साधनों की वास्तविक दशा संबंधी जानकारी लेने, शैक्षिक योजनाओं का निर्माण करने, विद्यालयों के समस्त कार्यक्रमों के उचित मूल्यांकन करने तथा शिक्षण कार्य को अधिक से अधिक प्रभावी बनाने की दिशा में शैक्षिक पर्यवेक्षण निःसंदेह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए प्रदेश में विद्यालयों में ज़िलावार पर्यवेक्षण की योजना बनाई गई है। निश्चित तौर पर इसके सकारात्मक परिणाम दिखेंगे।

-डॉ. अंशज सिंह
निदेशक माध्यमिक शिक्षा, मौलिक शिक्षा एवं राज्य परियोजना निदेशक, हरियाणा

क्यों है शैक्षिक पर्यवेक्षण की आवश्यकता?

वर्तमान विचारधारा के अनुसार निरीक्षक को निरीक्षण से हटकर एक पर्यवेक्षणकर्ता, सलाहकार और सहयोगी होना चाहिये। उसे केवल कमियों को ही नहीं देखना है, वरन अच्छे पहलुओं को प्रोत्साहन भी देना है। वर्तमान समय में निरीक्षण बहुत सीमा तक टैक्निकल होता जा रहा है। वर्तमान निरीक्षण एक सुनियोजित शैक्षिक गुणात्मक विकास की प्रक्रिया है, जिससे विद्यार्थी और शिक्षकों का क्रमशः उत्तरोत्तर विकास होता है। सीखने के लिये जो भी मानवीय एवं भौतिक साधन हैं, उनको सहयोगपूर्ण एवं सामंजस्यपूर्ण ढंग से जुटाना भी इसमें सम्मिलित है। आज निरीक्षण शिक्षकों एवं शाला प्रधान के परस्पर सहयोग से होता है।

पहले जिस कार्य के लिये 'निरीक्षण' शब्द का प्रयोग होता था, उसके लिये अब 'पर्यवेक्षण' शब्द का प्रयोग होता है। शिक्षा पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण को कुछ शिक्षाविद् भिन्न समझते हुए यह मानते हैं कि ये दोनों एक-दूसरे से अलग हैं, परन्तु ये दोनों एक-दूसरे से घनिष्ठता से संबंधित हैं। पहले निरीक्षक द्वारा हाकिम बनकर अध्यापकों के कार्यों का निरीक्षण किया जाता था, अब उसके स्थान पर पर्यवेक्षण सम्प्रत्यय आने से कार्य-पद्धति तथा उसकी भावना में अन्तर आ गया है। अतः शिक्षाशास्त्रियों ने निरीक्षण संबंधी नवीन धारणा को अभिव्यक्त करने के लिये एक नवीन शब्द का प्रयोग किया है जो पर्यवेक्षण' (Supervision) के नाम से जाना जाता है। यह केवल शब्दों का हेर-फेर नहीं है, वरन इनमें उद्देश्य, क्षेत्र, विधि एवं दृष्टिकोण का भी बड़ा अन्तर है।

पर्यवेक्षण का अर्थ एवं परिभाषाएँ-

शिक्षाविदों के कथनानुसार शिक्षा एक गतिशील तत्त्व है। उसका निरन्तर विकास होता रहता है। इसके द्वारा समाज की परम्पराओं तथा आदर्शों का संरक्षण भी होता है। जैसे-जैसे समाज की बदलती परिस्थितियों के अनुसार शिक्षण संस्थाओं के रूप में परिवर्तन हुआ है, वैसे-वैसे शैक्षिक पर्यवेक्षण का रूप भी बदला है। वास्तव में पर्यवेक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके अन्तर्गत शिक्षक एवं अधिकारियों के मध्य सहयोग की भावना को अधिक महत्त्व दिया जाता है। इसमें शिक्षक का सर्वोन्मुखी विकास निहित है। पर्यवेक्षण शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द सुपरविजन का हिन्दी रूपान्तर है। Super का अर्थ है- उच्च एवं Vision का अर्थ दृष्टि होता है, अर्थात सुपरविजन का अर्थ है-उच्च दृष्टि, जो विद्यालय को गति प्रदान करके उसे विकास की ओर उन्मुख करे। विभिन्न शिक्षाशास्त्रियों ने पर्यवेक्षण को अलग-अलग ढंग से परिभाषित किया है-

(1) ब्रिग्ज एवं जस्टमैन जॉसेफ के शब्दों में, सामान्य रूप से पर्यवेक्षण का अर्थ है, अध्यापकों की शक्ति को संयोजित करना, अनुप्रेरित करना तथा उन्हें इस योग्य बनाना कि वे अपनी प्रतिभाओं के प्रयोग से प्रत्येक विद्यार्थी को विकास की ओर अनुप्रेरित कर सकें।

(2) जॉन ए. बर्टकी के अनुसार, पर्यवेक्षण, शिक्षक के विकास, बालक की अभिवृद्धि तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के सुधार से संबंधित है।

(3) एच पी एडम्स एवं एफ, जी. डिकी. के अनुसार, पर्यवेक्षण एक सेवा कार्य है जो मुख्यतः निर्देशन एवं उसकी उन्नति से संबंधित है। यह प्रत्यक्ष रूप से शिक्षण तथा सीखने की प्रक्रिया और उनके तत्त्वों से संबन्धित है। ये तत्व-शिक्षक, छात्र, पाठ्यक्रम, निर्देश सामग्री, स्थिति का सामाजिक एवं भौतिक वातावरण आदि हैं।

(4) किम्बल के शब्दों में, परिनिरीक्षण या पर्यवेक्षण एक उत्तम शिक्षण-अधिगम परिस्थिति के विकास में

सहायता देता है।

(5) विल्स लिखते हैं, आधुनिक पर्यवेक्षण अध्यापन एवं अधिगम के श्रेष्ठ विकास में सहायक है।

(6) आयर के अनुसार, अपने सर्वोत्तम रूप में पर्यवेक्षण सभी शिक्षात्मक प्रयासों में सबसे अच्छा और सर्वाधिक प्रगतिशील प्रयास है। सबसे अच्छा इसलिये क्योंकि यह सर्वाधिक विचारशील होता है और सर्वाधिक प्रगतिशील इसलिये क्योंकि यह सर्वाधिक रचनात्मक होता है।

(7) ऑकलोमास्टेट डिपार्टमेण्ट ऑफ एजुकेशन के अनुसार, परिनिरीक्षण अथवा पर्यवेक्षण में शैक्षिक कार्यक्रम के प्रत्येक पहलू का सुधार निहित है। शैक्षिक कार्यक्रम में अध्ययन कार्यक्रमों का संगठन, पाठ्यक्रम का संशोधन, शिक्षण-प्रक्रियाएँ, छात्र-क्रिया कार्यक्रम तथा शिक्षक वर्ग की अशैक्षिक क्रियाएँ सम्मिलित हैं।

(8) हेराल्ड एवं मूर के अनुसार, पर्यवेक्षण में वे प्रवृत्तियाँ आती हैं, जिनका मूलतः संबंध उन परिस्थितियों के अध्ययन एवं सुधार से होता है जो प्रत्यक्षतः अधिगम, छात्र तथा शिक्षक के विकास से जुड़ी होती हैं।

(9) विलियम टी, मैलकॉइर के अनुसार, आजकल पर्यवेक्षण केवल शिक्षक तथा छात्र के विकास पर ही बल नहीं देता, वरन स्वयं पर्यवेक्षक वर्ग, अभिभावकों तथा अन्य सामान्य व्यक्तियों के विकास को भी ध्यान में रखता है। यह छात्र- समुदाय तथा संकाय (शाला) के प्रत्येक सदस्य की शारीरिक और सामाजिक कुशलता के विकास से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित है। यह उन तत्त्वों से भी संबंधित है, जो शैक्षिक विकास में अप्रत्यक्ष रूप से सहायक होते हैं।

विद्यालय प्रशासन एवं पर्यवेक्षण-

मेक्स आर. ब्रूसलेलर के शब्दों में, प्रायः प्रशासन और पर्यवेक्षण एक सिक्के के दो पहलू माने जाते हैं। वस्तुतः एक-दूसरे के कार्यों में अन्तर कर पाना भी बड़ा कठिन है, क्योंकि दोनों का उद्देश्य मुख्य रूप से अधिगम अध्यापन में सुधार लाना है।

पर्यवेक्षण का प्रमुख कार्य है- शैक्षिक कार्यों एवं गतिविधियों को सदैव प्रोन्नत करना और आवश्यकता पड़ने पर उनमें सुधार करना। विद्यालय प्रशासन शैक्षिक पर्यवेक्षण के लिये आवश्यक है, क्योंकि यदि विद्यालय प्रशासित नहीं होंगे तो पर्यवेक्षण किसका होगा? कक्षा के अनुसार छात्र-छात्राओं का वर्गीकरण, शैक्षिक उपकरणों की व्यवस्था तथा पुस्तकालय एवं वाचनालय की स्थापना आदि ऐसे कार्य हैं, जो विद्यालय प्रशासन के अन्तर्गत आते हैं।

इन सभी का पर्यवेक्षण के साथ बहुत ही घनिष्ठ संबंध है। विद्यालय में अध्यापक भी एक सीमा तक पर्यवेक्षण करता है, क्योंकि वह सदा अपने शिक्षण-कार्य

को प्रोन्नत करने का प्रयास करता है। अतः पर्यवेक्षण शैक्षिक प्रशासन का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। जो भी पर्यवेक्षण संबंधी कार्य प्रशासक करता है, प्रशासनिक कार्यों के अन्तर्गत समाहित किये जा सकते हैं। प्रशासन एवं पर्यवेक्षण दोनों में ही योजना निर्माण करनी होती है। अन्तर केवल यह है कि प्रशासक निर्णय लेता है तथा क्रियान्वित आदेश देता है। वहाँ पर्यवेक्षक निर्णय लेने में सहायता करता है तथा क्रियान्विति को लक्ष्य तक पहुँचाने में योग देता है।

विद्यालय पर्यवेक्षण की आवश्यकता-

विद्यालयों में पर्यवेक्षण की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से है-

(1) पर्यवेक्षण की सहायता से विभिन्न स्थलों पर स्थित विद्यालयों से सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है। (2) अध्यापकों की कार्य कुशलता को बढ़ाने हेतु पर्यवेक्षण आवश्यक है। (3) पर्यवेक्षण छात्र तथा शिक्षकों को अनुप्रेरित करने हेतु आवश्यक है। (4) यह विद्यालय में संचालित होने वाली गतिविधियों का मूल्यांकन करने में सहायता प्रदान करता है। (5) यह अध्यापक को अपने ज्ञान का नवीनीकरण करने में सहायता प्रदान करता है। (6) विद्यालय में उत्पन कुप्रवृत्तियों को दूर करने में सहायक है। (7) पर्यवेक्षण विद्यालय वातावरण को सुधारने के लिये भी आवश्यक होता है।

विद्यालय पर्यवेक्षण के उद्देश्य-

विद्यालय पर्यवेक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-(1) अध्यापकों को शिक्षा के सामान्य उद्देश्यों, विद्यालय के उद्देश्यों तथा परम्पराओं से अवगत कराना । (2) शिक्षकों एवं छात्रों की समस्याओं का ज्ञान करना। (3) छात्रों की समस्याओं के निदान एवं उपचार के लिये उचित कदम उठाना। (4)अध्यापकों को छात्रों की आवश्यकता एवं समस्याओं से अवगत कराना तथा उनके निराकरण हेतु उचित सहायता प्रदान करना । (5) अध्यापकों को प्रेरित कर उनकी अध्यापन-क्षमता को प्रोन्नत एवं विकसित करना। (6) अध्यापकों के नैतिक स्तर को प्रोन्नत करना। (7) अध्यापकों को समय-समय पर अध्यापन संबंधी नवीन गतिविधियों से परिचित कराना। (8) अध्यापकों की योग्यताओं तथा क्षमताओं का पता लगाकर उन्हें उनके अनुरूप कार्य सौंपना । (9) अध्यापन-क्षेत्र में आये नये अध्यापकों को अध्यापन-कार्य से परिचित कराकर उन्हें इस योग्य बनाना कि वे सरलता के साथ विद्यालय से समायोजन स्थापित कर सकें। (10) विद्यालय के छात्रों ने निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति किस सीमा तक की है, इसके आधार पर अध्यापकों का मूल्यांकन करना। (11) समस्यात्मक छात्रों की समस्याओं को समझने में अध्यापकों की सहायता करना तथा उनके निराकरण हेतु अध्यापकों को उपचारात्मक उपायों के लिये प्रेरित करना। (12) शिक्षकों को विशेष योग्यताओं के विकास के अवसर प्रदान करना। (13) मानवीय सम्बन्धों में परस्पर विश्वास उत्पन्न करना एवं सहयोग को बढ़ावा देना। (14) शिक्षकों को व्यावसायिक विकास के अवसर प्रदान करना। (15) विद्यालय विकास की योजनाओं में तथा कार्यक्रमों में शिक्षकों का नियमित सहयोग प्राप्त करना। (16) सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रमों का नियमित आयोजन करना। (17) विद्यालय, समुदाय तथा राष्ट्र के प्रति शिक्षक को स्वयं की भूमिका के प्रति सचेत करना। (18) विद्यालय एवं कर्मचारियों में कार्यों के प्रति निष्ठा जगाने के लिये उचित पर्यावरण सृजित करना। (19) विद्यालय के प्रशासनिक पक्ष का उन्नयन करना।

विद्यालय पर्यवेक्षण का क्षेत्र-

विद्यालय पर्यवेक्षण के क्षेत्र को मुख्य रूप से दो

भागों में बाँटा जा सकता है-
(1) पर्यवेक्षण की निदानात्मक भूमिका
(2) पर्यवेक्षण की मार्ग-दर्शन संबंधी भूमिका

1. पर्यवेक्षण की निदानात्मक भूमिका

पर्यवेक्षण की निदानात्मक भूमिका के अन्तर्गत मुख्य रूप से तीन बातें निहित हैं-
(क) कक्षा-शिक्षण का पर्यवेक्षण/अवलोकन
(ख) शिक्षकों द्वारा कक्षा में दिये गये कार्य का पर्यवेक्षण
(ग) प्रधानाध्यापक द्वारा शिक्षकों के प्रदत्त कार्य का पर्यवेक्षण

1. कक्षा-शिक्षण का पर्यवेक्षण-

कक्षा शिक्षण का निरीक्षण सर्वाधिक महत्त्व रखता है। कक्षा-शिक्षण पर्यवेक्षण के मुख्य उद्देश्य हैं-

(1) कक्षा-समस्याओं का पता लगाना। (2) शिक्षक द्वारा विकसित पाठ्य-वस्तु का विकास किस प्रकार किया जा रहा है ? इसका पता लगाना । (3) शिक्षक द्वारा किन कठिनाइयों का सामना किया जा रहा है? इसका पता लगाना एवं पता लगाकर उसके शिक्षण में सुधार लाने हेतु उसे सुझाव एवं सहायता प्रदान करना। नीगले एवन्स के अनुसार-प्रधानाचार्य और शिक्षक के मध्य सद्भाव बढ़ाने की दृष्टि से, शिक्षक की प्रगति के मूल्यांकन की दृष्टि से, समग्र सीखने की प्रक्रिया पर दृष्टिपात करने की दृष्टि से तथा शिक्षक के कौशल की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। शिक्षण के अच्छे और कमजोर पक्षों को जानने की दृष्टि से कक्षा शिक्षण का पर्यवेक्षण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

अतः कक्षा-शिक्षण के पर्यवेक्षण के द्वारा निम्नलिखित उद्देश्य पूर्ण होते हैं-

(1) कक्षा-समस्याओं का ज्ञान होता है। (2) शिक्षक की कक्षा-शिक्षण संबंधी कठिनाइयों का ज्ञान होता है। (3) शिक्षकों की सहायता करने एवं उन्हें सुझाव देने का अवसर प्राप्त होता है । (4) शिक्षक की प्रगति का मूल्यांकन किया जा सकता है। (5) विद्यार्थियों के स्तर का ज्ञान होता है। (6) शिक्षक एवं विद्यार्थियों की शिक्षण-अधिगम संबंधी कठिनाइयों का ज्ञान होता है। (7) शिक्षक एवं विद्यार्थियों के परस्पर व्यवहार का ज्ञान होता है।

इस प्रकार समग्र शिक्षण के सुधार का आधार ही कक्षा-शिक्षण पर्यवेक्षण है। जितना अच्छा एवं व्यापक कक्षा-निरीक्षण होगा, उतना ही शिक्षक का व्यावसायिक उन्नयन एवं छात्रों की अधिगम-प्रक्रिया का विकास किया जा सकता है।

2. शिक्षकों द्वारा कक्षा में दिये गये कार्य का पर्यवेक्षण

यह कार्य भी पर्यवेक्षण की निदानात्मक भूमिका में आता है। इसके अन्तर्गत शिक्षक द्वारा कक्षा में किये गये कार्य-पाठ का सारांश देना, गृह-कार्य देना, प्रायोगिक कार्य करवाना, व्याख्या देना आदि का समावेश होता है। इन कार्यों के रिकॉर्ड के आधार पर शिक्षक की योग्यता, कार्य के प्रति निष्ठा, विषय की तैयारी एवं विद्यार्थियों को दिये गये कार्यों की जाँच आदि का पता लग सकता है। समयाभाव एवं व्यस्तता के कारण प्रधानाध्यापक प्रत्येक कक्षा में नहीं जा सकता, परन्तु इन्हीं कार्यों के रिकॉर्ड की सहायता से वह शिक्षक एवं विद्यार्थियों के कार्य का मूल्यांकन कर सकता है।

3. प्रधानाध्यापक द्वारा शिक्षकों के प्रदत्त कार्य का पर्यवेक्षण

शिक्षक का कार्य बालक का केवल मानसिक विकास करने तक ही सीमित नहीं है, वरन उसे उसके शारीरिक, सामाजिक, भावात्मक तथा संवेगात्मक आदि के विकास को भी ध्यान में रखना होता है। विकास के इन विविध क्षेत्रों में शिक्षक अनेक पाठ्य-सहगामी या पाठ्येतर प्रवृत्तियों का संचालन करता है। उदाहरणार्थ- सांस्कृतिक कार्यक्रम, शैक्षिक भ्रमण, खेलकूद, संगोष्ठियाँ एवं प्रदर्शनियाँ आदि। ये सभी कार्य वस्तुतः शैक्षिक ही हैं एवं बालक के सर्वांगीण विकास में पूर्णरूप से सहायक होते हैं। दक्षता से इन कार्यकलापों को करने वाले शिक्षकों को प्रोत्साहित करने हेतु एवं शिक्षकों का समुचित मार्गदर्शन करने के लिये अथवा उचित कार्यवाही करने के लिये प्रधानाध्यापक इन कार्यों का पर्यवेक्षण करता है। सत्य तो यह है कि जहाँ शैक्षिक कार्य कक्षा तक ही सीमित रहते हैं वहीं ये कार्य विद्यालय को समुदाय के साथ जोड़ते हैं। अतः इनके कार्यों का समय-समय पर पर्यवेक्षण तथा आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन प्रत्येक प्रधानाध्यापक के लिए परमावश्यक है।

2. पर्यवेक्षण की मार्ग-दर्शन संबंधी भूमिका

प्रधानाध्यापक द्वारा शिक्षकों की शैक्षिक, शिक्षेतर योग्यताओं, उनकी विशेषताओं, उनकी त्रुटियों तथा सीमाओं को जान लेने के पश्चात यह आवश्यक हो जाता है कि वह स्तर से नीचे कार्यों को ऊपर उठाने के लिये तथा औसत स्तर के कार्य को श्रेष्ठतर बनाने के लिये नियमित रूप से उनका मार्ग-दर्शन करे। प्रधानाध्यापक

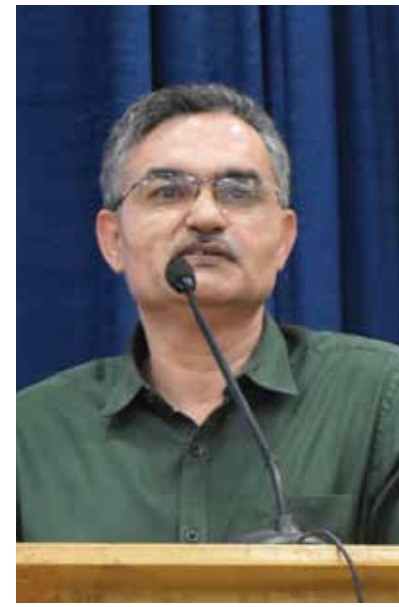

के इन कार्यकलापों को मुख्यतः तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है-

1. शिक्षकों की व्यावसायिक समस्याएँ एवं पर्यवेक्षण

प्रधानाध्यापक को केवल पर्यवेक्षण की कला में ही दक्ष नहीं होना चाहिये, वरना शिक्षकों को उनके व्यावसायिक विकास में योग देने के लिये उसे योग्य सलाहकार (Conslutant) भी होना चाहिये। सलाहकार

के रूप में वह शिक्षक के विविध कार्यकलापों के विकास में भी ध्यान देता है। एनईए के एक सर्वेक्षण के अनुसार वह शिक्षकों के सामूहिक प्रोजेक्ट एवं नवीन विधाओं तथा शोधों में भी योग देता है।

2. शिक्षकों के गुण-दोष तथा पर्यवेक्षण

पर्यवेक्षक दोनों प्रकार के शिक्षकों की सहायता करता है। वे शिक्षक जो विषय में अत्यन्त कमजोर होते हैं, उनकी कमियों को दूर करता है तथा योग्य शिक्षकों को निरन्तर अपनी कार्यकुशलता एवं योग्यता बढ़ाने के लिये प्रोत्साहित करता है। इसके लिये पर्यवेक्षक को प्रत्येक शिक्षक के कमजोर पक्ष तथा सबल पक्ष को जानना परमावश्यक है। नीगले तथा एवन्स ने पर्यवेक्षक की इस भूमिका को उसकी नेतृत्व सम्बन्धी भूमिका का प्रमुख अंग माना है।

3.शिक्षकों की शिक्षेतर त्रुटियों को दूर करते हुए उनकी क्षमताओं को विकास से संबंधित करना

पर्यवेक्षक के लिये आवश्यक है कि वह शिक्षकों की त्रुटियों के निदान के बाद उन त्रुटियों का परिमार्जन करे। इसी प्रकार शिक्षकों की क्षमताओं का भी उनके पूर्ण व्यावसायिक, शैक्षिक एवं शिक्षेतर विकास के लिये सहयोग मिलना चाहिये, जिससे विद्यालयी विकास में उनका प्रतिभागित्व हो सके। इसके लिये पर्यवेक्षक और शिक्षक मिलकर निम्नलिखित आयोजन कर सकते हैं-

(1) प्रदर्शन-पाठ आयोजित करना। (2) स्टडी सर्किल चलाना। (3) पाठ्य-वस्तु में पुनः दीक्षित करना। (4) सेमिनार, वर्कशॉप, विचारगोष्ठियाँ आदि आयोजित करना । (5) केन्द्रीय पुस्तकालय की व्यवस्था करना। (6) शैक्षिक उपलब्धि हेतु पत्र-पत्रिकाएँ एवं ग्रन्थों की व्यवस्था करना। (7) व्यक्तिगत समस्याओं पर व्यक्तिगत विचार करना। (8) स्थानीय उच्च शिक्षण केन्द्रों का भ्रमण करना। (9) ग्रीष्मकालीन उन्नयन पाठ्यक्रमों के लिये शिक्षकों को भेजना। (10) नवीन प्रयोगों को प्रोत्साहन देना। (11) विस्तार भाषणों का आयोजन करना।

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास करना है

अतः निम्नलिखित पक्षों के पर्यवेक्षण पर भी विद्यालय में बल दिया जाना अति आवश्यक है-

(1) मानसिक विकास के लिये-अध्यापन अधिगम प्रवृत्तियाँ।

(2) शारीरिक विकास के लिये-खेलकूद प्रवृत्तियाँ।

सामाजिक, सांस्कृतिक एवं संवेगात्मक विकास के लिये विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का आयोजन करना आवश्यक है। अतः प्रधानाध्यापक के लिये कक्षा अनुदेशन के अतिरिक्त खेलकूद प्रवृत्तियों, सांस्कृतिक प्रवृत्तियों आदि का भी पर्यवेक्षण करना अति आवश्यक है। जहाँ-जहाँ त्रुटियाँ या दोष हों, उन्हें दूर करने का प्रयत्न किया जाना चाहिये। कार्यालय का भी पर्यवेक्षण आवश्यक है। विभिन्न रिकॉर्ड, उनका उचित रख-रखाव, वित्तीय लेखा-जोखा, बजट तथा छात्रवृत्ति खातों आदि की समय-समय पर जाँच करना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त विद्यालय भवन, कक्षा-कक्ष, कार्यालय, छात्रावास, प्रयोगशाला, फर्नीचर, उपकरण आदि का भी समय-समय पर पर्यवेक्षण आवश्यक है। वर्ष में एक बार सभी सामान का भौतिक सत्यापन होना भी आवश्यक है। इस प्रकार के पर्यवेक्षण अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं, यदि ये सुनियोजित, नियमित तथा व्यापक हों।

साभार

https://hindiamrit.com/

किन कोनों में अभी है अँधेरा ?

पर्यवेक्षकों की अनुशंसाओं के आधार पर शिक्षा-व्यवस्था में सुधार के लिए ज़िलों को दिये गये निर्देश

डॉ. प्रदीप राठौर

माननीय मुख्य सचिव महोदय के आदेशों के अनुपालन में विभाग ने 11 नवंबर को महेंद्रगढ़, 18 नवंबर को गुरुग्राम, 9 दिसंबर को नूँह और 16 दिसंबर को यमुनानगर जिले का पर्यवेक्षण किया, जिसमें विभिन्न हितधारकों, जैसे- विद्यालय प्रबंधन समितियों, अध्यापकों, स्कूल मुखियाओं, अभिभावकों तथा खंड एवं जिला स्तर के शिक्षा अधिकारियों से चर्चा एवं बैठकें की गईं । इन जिलों के 700 से अधिक वरिष्ठ माध्यमिक एवं प्राथमिक विद्यालयों का पर्यवेक्षण करने के उपरांत विभाग ने प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण के बाद वे बिंदु खोजे हैं, जिन पर कार्य करने की आवश्यकता है। इन तीन जिलों के शिक्षा अधिकारियों को तो इस दिशा में कार्य करने के निर्देश दिए ही हैं, साथ ही उन जिलों के शिक्षा अधिकारियों को भी पहले से इसकी सूचना दी है, जहाँ अभी पर्यवेक्षण किया जाना है। दूसरे शब्दों में कहें तो विभाग ने इस पर्यवेक्षण कार्यक्रम को काफी गंभीरता से लेते हुए इसके परिणामों व निष्कर्षों के आधार पर शिक्षा व्यवस्था में सुधार की व्यापक योजना पर काम करना आरंभ कर दिया है। विभाग ने 19 दिसंबर को यादी क्रमांक-1/27-2016 एसीडी (4) के तहत प्रदेश के सभी ज़िला शिक्षा अधिकारियों, ज़िला मौलिक शिक्षा अधिकारियों, ज़िला परियोजना समन्वयकों, डाइट प्रधानाचार्यों, खंड शिक्षा अधिकारियों को शिक्षा दीक्षा पर्यवेक्षण के दौरान पर्यवेक्षकों की अनुशंसाओं के आधार पर निम्न निर्देश दिए हैं-

1.स्कूल मुखिया करें नियमित पर्यवेक्षण -

स्कूल मुखिया द्वारा कक्षाओं में जाकर अध्यापन कार्य के पठन-पाठन का नियमित पर्यवेक्षण अनिवार्य है। अध्यापकों की डायरी, पाठ-योजना व विद्यार्थियों की शैक्षिक दक्षताओं की जाँच उसकी नियमित क्रियाओं में शामिल होना चाहिए। प्रधानाचार्य को स्वयं भी सप्ताह में बारह पीरियड का शिक्षण कार्य करना होता है। पर्यवेक्षण के दौरान यह देखने को मिला है कि 40% प्रधानाचार्य शिक्षण कर्म नहीं कर रहे, अगर कर भी रहे हैं तो वे उस विषय का अध्यापन नहीं कर रहे जिसके वे पीजीटी रहे थे। उक्त दोनों बिंदुओं की अनिवार्यता के बारे में निर्देश दिए गए।

2. छात्रों की कम उपस्थिति चिंताजनक-

चार जिलों के पर्यवेक्षण के आँकड़े स्पष्ट बता रहे हैं कि विद्यालयों में विद्यार्थियों की औसत उपस्थिति 73 प्रतिशत है। यह चिंतनीय है। इसे कम से कम 90% किये जाने के निर्देश दिए गए।

3. डिजिटल बोर्ड के इस्तेमाल में उदासीनता-

सरकार के द्वारा शिक्षकों को नई तकनीक से लैस करने में कोई कसर नहीं छोड़ी जा रही, लेकिन देखने में आया है कि कुछ अध्यापक इसके प्रति उदासीनता दिखा रहे हैं। यह भी देखने में आया है कि जहाँ इनका समुचित उपयोग हो रहा है, वहाँ विद्यार्थी अपेक्षाकृत अधिक मनोयोग से सीखते हुए मिले हैं। अतः इनका पूरी तरह उपयोग सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

4.अलमारियों में बंद न रहें पुस्तकालयों की पुस्तकें-

पर्यवेक्षण के दौरान यह देखा गया कि विद्यालयों के पुस्तकालयों में समुचित मात्रा में पुस्तकें उपलब्ध हैं, लेकिन मात्र 67% विद्यालयों में ही विद्यार्थियों को स्वाध्याय के लिए पुस्तकें दी जा रही हैं।

कुछ विद्यालयों में विद्यालय की छात्र संख्या के

अनुपात में मात्र 4 से 5% विद्यार्थियों को ही पुस्तकें दी जा रही हैं। यह भी चिंता का विषय है। विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम की पुस्तकों के अलावा अन्य पुस्तकों को पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाना और उसका बाकायदा रिकॉर्ड रखना आवश्यक है।

5. प्रयोगशालाओं का उपयोग-

पर्यवेक्षण के आँकड़े बताते हैं कि मात्र 67 प्रतिशत प्रयोगशालाओं का ही समुचित उपयोग हो रहा है। विज्ञान विषय को रोचक बनाने और इसके प्रति रुझान पैदा करने के लिए प्रयोगशालाओं का समुचित उपयोग अत्यावश्यक है। मुखियाओं को यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए कि प्रयोगशालाओं का पूरी तरह से उपयोग हो।

6. सहायक शिक्षण सामग्री का उपयोग-

पर्यवेक्षक के संज्ञान में आया है कि शिक्षक सहायक शिक्षक सामग्री का उपयोग न के बराबर कर रहे हैं। प्राथमिक कक्षाओं में जहाँ निपुण कार्यक्रम चल रहा है, वहाँ भी शिक्षक परंपरागत ढंग से पढ़ाते नज़र आए। न तो शिक्षण की वे विधियाँ दिखाई दीं, जिनका उन्हें प्रशिक्षण दिया गया था और न ही किट का उपयोग करते हुए वे दिखाई दिए। विभाग ने इस बात को गंभीरता से लिया है। ये निर्देश दिए गए हैं कि मुखियाओं का यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि अध्यापक शिक्षण को रोचक व प्रभावी बनाने के लिए सहायक शिक्षण सामग्री का नियमित उपयोग करें।

7. डायरी लेखन मात्र औपचारिकता न रहे-

विद्यालयों में अध्यापक डायरी तो मिल रही है, लेकिन अधिकांश स्थानों पर ऐसा देखने में आया है कि डायरी लेखन को मात्र औपचारिकता निर्वहन के लिए लिखा जा रहा है। डायरी और पाठ योजना वे अस्त्र हैं जो शिक्षण को प्रभावी बनाते हैं। इन पर बल देने के भी निर्देश दिए गए।

8. स्किल पासबुक का उपयोग-

पर्यवेक्षण के दौरान देखा गया कि केवल 72 प्रतिशत विद्यालयों द्वारा ही पर्यवेक्षकों के सम्मुख स्किल पासबुक प्रस्तुत की गईं। जब पर्यवेक्षकों ने इस आधार पर विद्यार्थियों की दक्षता को जाँचा तो अनेक विद्यार्थियों की स्किल पासबुक में अंकित दक्षताएँ सही नहीं पाई गईं। कुछ विद्यालयों से जानकारी मिली कि संबंधित जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी द्वारा उन्हें स्किल पासबुक ही उपलब्ध नहीं करवाई गई, जबकि अधिकारियों को गत वर्ष इन्हें उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए गए थे। अब विभाग ने उन्हें निर्देश दिए हैं कि वे अब इस संबंध में आवश्यक कार्यवाही करें तथा आगामी जिलों के पर्यवेक्षण के दौरान ऐसी चूक न मिले।

9.एबीआरसी तथा बीआरपी का पर्यवेक्षण-

पर्यवेक्षकों के संज्ञान में यह भी आया है कि एबीआरसी तथा बीआरपी जिनका कार्य अध्यापकों को विषय से संबंधित परामर्श व मार्गदर्शन प्रदान करना है, वे इस कार्य को गंभीरता से नहीं निभा रहे हैं। विद्यालयों में इनके द्वारा किए गए पर्यवेक्षण की सूचना, रिपोर्ट, सुझाव व परामर्श आदि का कोई रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं है, जबकि यह नितांत आवश्यक है।

10. सीआरसी केंद्रों की स्थिति-

पर्यवेक्षण के दौरान पाया गया कि सीआरसी केंद्रों की स्थापना जिन उद्देश्यों को लेकर की गई थी वे उन भूमिकाओं को उचित रूप से निभाते दिखाई नहीं दिए। इन्हें भी प्रभावी बनाने के निर्देश दिए गए।

11. विद्यालय प्रबंधन समितियों की भूमिका-

पर्यवेक्षकों के संज्ञान में यह भी आया कि विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्यों को यह तो ज्ञात है कि विद्यालय में विभिन्न कार्यों के लिए कितनी अनुदान राशि आई, लेकिन शिक्षा व्यवस्था के सुधार में उनकी भूमिका नगण्य मिली। अक्सर ऐसा देखा जाता है कि जिन विद्यालयों में ये समितियाँ सक्रियता के साथ कार्य कर रही हैं, वहाँ के शैक्षणिक माहौल तथा सामुदायिक सहयोग से विद्यालय के ढाँचागत सुधारों के कार्य बेहतर होते हैं। इनकी सक्रियता को बढ़ाने के भी निर्देश दिए गए।

12. प्रिंटरिच वातावरण-

प्रिंटरिच वातावरण का भी अभाव मिला। इस पर भी बल देने के निर्देश दिए गए।

drpradeeprathore@gmail.com

पर्यवेक्षण से शिक्षण सुधार

नवंबर माह से आरंभ हुआ पर्यवेक्षण कार्यक्रम सुभीते से चल रहा है। यह विभाग की एक नियमित प्रक्रिया है, क्योंकि शिक्षा के वांछित लक्ष्यों की सिद्धि व शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सुधार लाना विभाग की प्राथमिकताओं में शामिल रहता है। इस प्रशिक्षण में पाठ्यक्रम की मासिक बाँट के आधार पर शैक्षणिक प्रगति का जायजा लिया जा रहा है, स्किल पास बुक में दर्ज कौशलों को देखकर विद्यार्थियों के कौशल-विकास का आकलन किया जा रहा है, विद्यालय प्रबंधन समितियों के सदस्यों से संवाद स्थापित करके सामुदायिक भागीदारी व गतिशीलता पर बल दिया जा रहा है, ई-अधिगम प्रोजेक्ट की वास्तविक स्थिति की जानकारी लेकर शिक्षकों व विद्यार्थियों को इसके अधिकतम उपयोग के लिए प्रेरित किया जा रहा है, डिजिटल बोर्ड, टीएलएम/टीएलई के उपयोग के लिए प्रेरित किया जा रहा है। विद्यालयों को भेजी गई विभिन्न ग्रांटों का इस्तेमाल व भौतिक संसाधनों की जानकारी को जुटाया जा रहा है। पर्यवेक्षण की मुख्य बात यह है कि यह एकतरफा नहीं है। यदि विद्यालयों की कमियों की ओर इंगित किया जा रहा है तो उनके श्रेष्ठ कार्यों की सराहना करते हुए उनकी पीठ भी थपथपाई जा रही है। इस पर्यवेक्षण कार्यक्रम के सकारात्मक परिणाम दिखने आरंभ हो चुके हैं।

विवेक कालिया

निदेशक, एससीईआरटी हरियाणा, गुरुग्राम

ड्रोन बनाकर नई उड़ान भर रहे हैं स्कूली विद्यार्थी

आईबीएम और एआईएफ ने छात्रों को नैनो सैटेलाइट्स और ड्रोन्स विकसित करने का दिया प्रशिक्षण

आधुनिक युग विज्ञान का युग है। इसी बात को सिद्ध करते हुए अमेरिकन इंडिया फाउंडेशन (एआईएफ) ने आयोजित किया तीन दिवसीय पिको सैटेलाइट इवेंट, जिसका उद्देश्य प्रगतिशील शिक्षा की अवधारणा को बढ़ावा देना था। अमेरिकन इंडिया फाउंडेशन (एआईएफ) हरियाणा के 9 जिलों में स्टैम फॉर गर्ल्स इंडिया (एसएफजीआई) प्रोजेक्ट के अंतर्गत काम कर रही है। बीती अगस्त 15, 16 व 17 को (एआईएफ) ने आईबीएम और स्पेस ज़ोन इंडिया आर्गेनाइजेशन के कॉलेब्रेशन द्वारा तीन दिवसीय पिको सेटेलाइट इवेंट आयोजित किया गया। इनोवेशन प्रोजेक्ट के इस संस्करण में आईबीएम और एआईएफ ने पंचकूला सेक्टर 20 स्थित संस्कृति मॉडल स्कूल में 40 मेधावी छात्रों को नैनो सैटेलाइट्स और ड्रोन्स विकसित करने का प्रशिक्षण दिया गया ।

उद्देश्य-

यह प्रोजेक्ट निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया था-

- सैटेलाइट्स, ड्रोन्स और स्पेस टेक्नोलॉजी पर ज्ञान देना।
- स्टेम विषयों और स्पेस टेक्नोलॉजी में उच्च शिक्षा के लिये आकांक्षा को बढ़ावा देना।
- सैटेलाइट्स और ड्रोन्स को असेंबल करने का व्यावहारिक अनुभव देना।
- स्टेम में कॅरियर पर जागरूकता निर्मित करना और आत्मविश्वास तथा समस्या सुलझाने की कुशलता विकसित करना।

इस इवेंट में 9 जिलों के 100 सरकारी स्कूलों में से 1460 छात्राओं ने भाग लिया जिनमें से 104 छात्राओं का चयन प्रारंभिक प्रशिक्षण के लिए किया गया। इसके बाद पंचकूला वर्कशॉप के लिए 40 छात्रों का चयन किया गया।

17 अगस्त, 2022 बुधवार यानी वर्कशॉप के अंतिम दिन पिछले दो दिवसीय प्रोग्राम के तहत बच्चों द्वारा बनाए गए ड्रोन और अन्य सेटेलाइट से जुड़ी हुई चीजों की प्रदर्शनी भी लगाई गयी।

प्रशिक्षण, उसके बाद हुए प्रैक्टिकल वर्क व इंटरव्यू के आधार पर इन्हीं 40 में से 4 विद्यार्थी चुने गए जो अब आगे की प्रशिक्षण के लिए चेन्नई जाएँगे व देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी से मिलेंगे। राष्ट्रीय स्तर पर एक कार्यक्रम में माननीय प्रधानमंत्री उन्हें सम्मानित भी करेंगे।

अगले चरण के लिए इन 40 छात्राओं में से टॉप 4 छात्राओं को चुना गया। इन चार छात्राओं में गौरी शर्मा (कैथल), डॉली शर्मा (अम्बाला), हिमांशी (पंचकूला) और भूमिका (पंचकूला) शामिल है। ये चारों छात्राएँ चेन्नई में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाले एक कार्यक्रम में भाग लेंगी। कार्यक्रम में छात्राओं ने अपने द्वारा तैयार किये

ड्रोन उड़ाकर दिखाए।

इस पूरे प्रोग्राम के दौरान हरियाणा के शिक्षा मंत्री वीडियो कांफ्रेंसिंग द्वारा जुड़े और हरियाणा माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा के अतिरिक्त निदेशक, श्री विवेक कालिया भी कार्यक्रम में मौजूद रहे। साथ ही इस अवसर पर आईबीएम इंडिया साउथ एशिया के सीएसआर प्रमुख मनोज बालचंद्रन, रीजनल टेक्नोलॉजी लीडर लता सिंह , अमेरिकन इंडिया फाउंडेशन के DE प्रोग्राम के ऑपरेशन हेड, रेणुका मालाकार व कविता श्रीवास्तव मौजूद रहे।

इस दौरान हरियाणा के शिक्षा मंत्री श्री कँवर पाल ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से बच्चों का उत्साहवर्धन किया और उन्हें शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि अमेरिकन इंडिया फाउंडेशन और आईबीएम ने सरकार के साथ मिलकर एक अच्छा प्रयास किया है और ऐसे कार्यक्रमों से हरियाणा के बच्चों को एक बढ़िया प्लेटफार्म मिलेगा। उन्होंने कहा कि इन छात्राओं ने चुनौतियों को हल करने के लिए टेक्नोलॉजी को लागू करने में अपनी क्षमता का बेहतर प्रदर्शन किया है।

इवेंट में प्रतिभागिता करने वाले विद्यार्थियों का क्या कहना है-

हिमांशी ने बताया- मैं गवर्नमेंट मॉडल सीनियर सैकेंडरी स्कूल, सेक्टर-20 (पंचकूला) से हूँ। मुझे बहुत ही अच्छा लग रहा है कि हमें चेन्नई के लिए चुना गया है। मैं काफी ज़्यादा खुश और एक्साइटिड हूँ कि हम वहाँ माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी से मिलेंगे। ट्रेनिंग पीरियड बहुत अच्छा रहा है। हमने पहले नौ दिन वर्चुअल क्लासेज ली हैं और फिर हमारा वर्कशॉप हुआ है। काफी कुछ सीखने को मिला है। इन दिनों में सभी का पूरा सहयोग रहा है। टीचर्स, AIF टीम, SFGI टीम आदि सभी ने काफी अच्छे से कार्यक्रम को कोऑर्डिनेट किया है। इतनी छोटी उम्र में हमने यह सब सीख लिया है तो इसके लिए मैं धन्यवाद देना चाहूँगी एंड स्पेस ज़ोन इंडिया, AIF की टीम एंड स्टैम फ़ॉर गर्ल्स इंडिया प्रोग्राम को। इसके साथ ही अपने टीचर्स व माता-पिता को भी धन्यवाद कहना चाहूँगी।

डॉली शर्मा ने बताया- मैं राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, काँवला, ज़िला- अम्बाला की छात्रा हूँ। मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। मैं सौभाग्यशाली मानती हूँ कि इस कार्यक्रम के लिए मेरा चयन हुआ। इंटरव्यू में मुझ से कुछ प्रश्न पूछे गए थे, जिनका जवाब मैंने काफी आत्मविश्वास से दिया था। जब कार्यक्रम के लिए मेरा चयन हुआ तो मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। इस सब के लिए पहले हमें ऑनलाइन कक्षाएँ लेनी पड़ी थीं और बाद में ऑफलाइन प्रशिक्षण भी मिला।

प्रशिक्षण में हमें सेटेलाइट के स्ट्रक्चर को लैपटॉप में करना सिखाया गया, बल्ब को सीरीज में जोड़ना सिखाया और कोडिंग करना सिखाया गया कि किस प्रकार से हम डेटा को ट्रांसफर कर सकते हैं व साथ ही ड्रोन्स को उड़ाना भी सिखाया। हमारा दो दिन का आवासीय सेमिनार रहा है। तीसरे दिन अधिकारीगण आने वाले हैं। मुझे बहुत खुशी हो रही है। अब मुझे ऐसा अवसर मिल रहा है कि मैं पीएम नरेंद्र मोदी जी से मिलूँगी। मुझे इसके लिए बहुत खुशी हो रही है। मैं यहाँ तक पहुँचने के लिए सबसे पहले सभी एआईएफ टीम का सहयोग मानती हूँ, साथ ही अपने प्रशिक्षकों का भी धन्यवाद करती हूँ। उनके सिखाने का तरीका काफी अच्छा था। हम जो भी प्रश्न पूछते थे वे बड़ी अच्छी तरह से हमारी शंकाओं का समाधान करते थे। अपनी सफलता के पीछे मैं अपने अभिभावकों का, अध्यापकों का और सारी एआईएफ टीम का सहयोग मानती हूँ।

शिक्षा विभाग के एडिशनल डायरेक्टर विवेक कालिया ने बताया- शिक्षा विभाग, आईबीएम की कॉलेब्रेशन व अमेरिकन इंडिया फाउंडेशन के सहयोग से यह इवेंट ऑर्गनाइज़ किया था, जिसमें सात ज़िलों के सरकारी स्कूल के बच्चों को भाग लेने का अवसर मिला था। ये शॉर्टलिस्टेड बच्चे हैं जिन्हें रियल टाइम रोबोटिक्स ट्रेनिंग दी गयी। रोबोटिक्स, ड्रोन्स और रॉकेट्स की मेकिंग, असेम्बलिंग आदि इन सभी पर बच्चों ने काम किया है। इस तरह के इवेंट्स को हम आगे भी चाहेंगे। बहुत ही अच्छा कार्यक्रम रहा है। आईबीएम की तरफ़ से अभी और ज़िलों और स्कूलों शॉर्टलिस्ट किया जा रहा है। उम्मीद है कि यह प्रशिक्षण उनके लिए भी लाभदायक रहेगा।

-रवि सखारे

सेहत: बच्चों के स्वास्थ्य-सुधार का अनूठा कार्यक्रम

सरकार द्वारा बच्चों की आयु अनुसार सही विकास सुनिश्चित करने हेतु एक अनोखी पहल

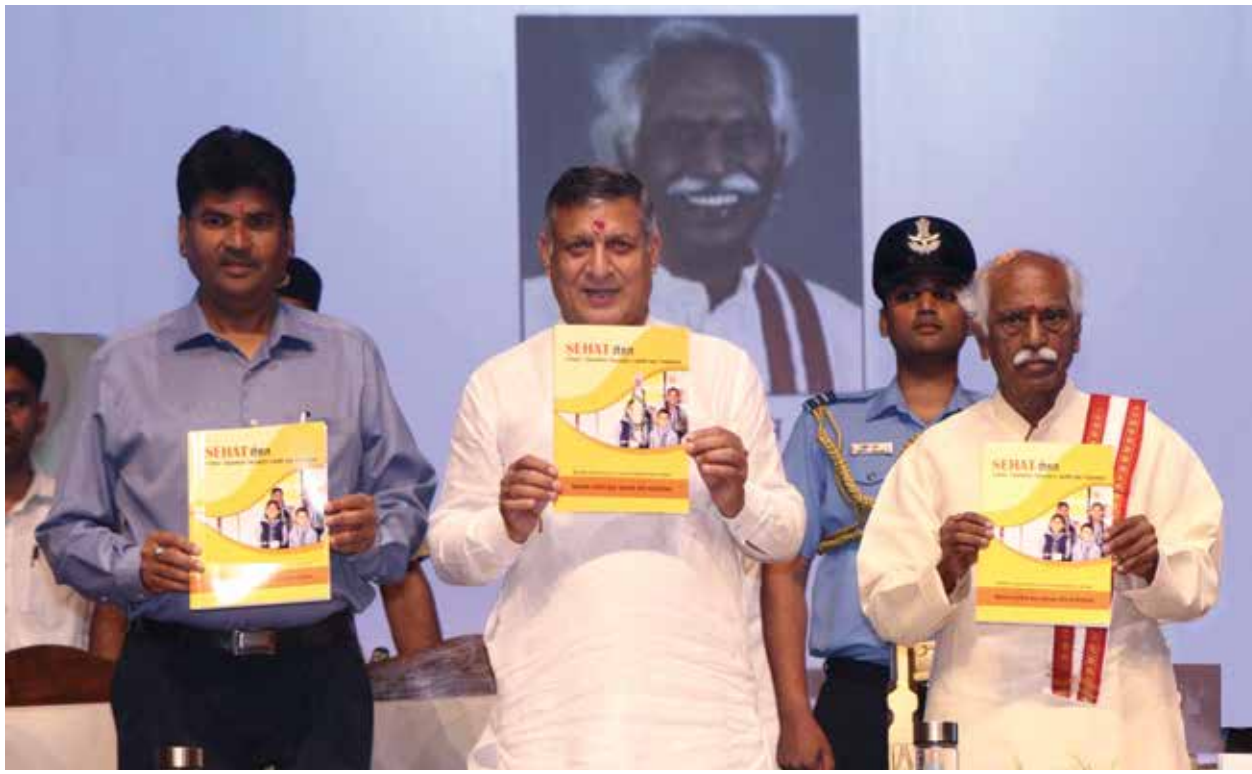

सुभाष शर्मा

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग तथा शिक्षा मंत्रालय की एक संयुक्त पहल 'आयुष्मान भारत' के तहत स्कूल स्वास्थ्य संवर्धन गतिविधियाँ सरकारी स्कूलों में स्वास्थ्य प्रचार गतिविधियों के माध्यम से निवारक और प्रोत्साहन पहलुओं को मजबूत करने के लिए शुरू की गई हैं, जिनका मुख्य ध्येय स्वास्थ्य शिक्षा, स्वास्थ्य संवर्धन, बीमारी की रोकथाम और स्कूल स्तर पर एकीकृत व्यवस्थित तरीके से स्वास्थ्य सेवाओं को विद्यार्थियों तक पहुँचाना है।

इसी कड़ी में राजकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ उनकी सेहत का ध्यान रखने के लिए हरियाणा माध्यमिक शिक्षा विभाग द्वारा नई योजना को आरंभ किया गया है। स्कूली बच्चों की स्वास्थ्य जाँच के लिये आयुष्मान भारत कार्यक्रम के तहत एक नई स्कूल स्वास्थ्य योजना 'सेहत' को आरंभ किया है। जिसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के स्वास्थ्य का विकास करना है जिससे उनके उज्ज्वल व सतत विकास को सुनिश्चित किया जा सके।

इस योजना का शुभारंभ हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्रात्रेय ने पंचकूला में बीते दिनों किया। राज्यपाल ने कहा कि शिक्षित एवं स्वस्थ बच्चे देश का भविष्य हैं। देश के इस भावी कर्णधार के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए आयुष्मान भारत कार्यक्रम के तहत एक नई स्कूल स्वास्थ्य योजना 'सेहत' शुरू की गई है। इस योजना के अंतर्गत आगामी शैक्षणिक सत्र से साल में दो बार 25 लाख स्कूली बच्चों के स्वास्थ्य की जाँच की जाएगी। विद्यार्थियों का डिजिटल हेल्थ रिकॉर्ड बनाया जायेगा।

राज्यपाल बंडारू दत्रात्रेय ने कहा कि मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने बजट के दौरान भी यह घोषणा की कि शिक्षित और स्वस्थ बच्चे प्रदेश का भविष्य हैं। स्कूल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के केन्द्र होने के अलावा बच्चों के स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों की पहचान करने के लिए केन्द्र के रूप में भी काम करेंगे और स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों के उपचार के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों और जिला अस्पतालों के साथ जुड़ेंगे। बच्चों से एकत्र किए गए डेटा को ई- उपचार से जोड़ा जाएगा, जिससे किसी भी स्थान पर बच्चे का डिजिटल स्वास्थ्य रिकॉर्ड उपलब्ध होगा।

उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम को सफल बनाने के

लिए प्रदेश में हज़ारों शिक्षकों को स्वास्थ्य और कल्याण एम्बेस्डर के रूप में प्रशिक्षित किया गया है। साथ ही सभी जिलों में ऑनलाइन और ऑफलाइन प्रशिक्षण के माध्यम से अनेक प्रधानाध्यापकों को उन्मुख किया गया है। हरियाणा प्रदेश शिक्षकों के प्रशिक्षण के बाद स्कूल आधारित गतिविधियाँ शुरू करने वाला पहला राज्य बन गया है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि शिक्षक जहाँ समाज में शिक्षा की लौ को तेज कर रहे हैं, वहीं बच्चों के बेहतर स्वास्थ्य के लिए शुरू की गई इस योजना के क्रियान्वयन में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे। इस अवसर पर राज्यपाल बंडारू दत्रात्रेय ने सेहत योजना का पोस्टर व पत्रिका का विमोचन भी किया।

इस अवसर पर शिक्षामंत्री श्री कँवरपाल ने कहा कि सेहत योजना के द्वारा राज्य के सरकारी स्कूलों के सभी छात्रों की दो चरणों में स्क्रीनिंग की जाएगी। प्रथम चरण में डॉक्टरों की टीम छात्रों का निरीक्षण करेगी। यह चरण लगभग तीन से चार महीने तक चलेगा जिसमें सभी सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले सभी छात्रों का स्वास्थ्य परीक्षण किया जाएगा। सभी विद्यालयों का चिकित्सकों की टीम द्वारा उनके माइक्रोप्लान में दिए गए विवरणानुसार दौरा किया करेगी। सभी सरकारी स्कूलों के छात्रों का परीक्षण चार घटकों पर किया जाएगा। जिसमें मुख्यतः हीमोग्लोबिन, वजन, ऊँचाई, दृश्य तीक्ष्णता और दंत स्थितियों को देखना है। प्रथम चरण में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की डॉक्टरों की टीमों द्वारा परीक्षण किया जाएगा। स्कूलों में प्रत्येक स्क्रीनिंग दिवस पर राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के डॉक्टरों की टीमों द्वारा दूसरे चरण की स्क्रीनिंग के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाएगा।

डॉ. महावीर सिंह, अतिरिक्त मुख्य सचिव, शिक्षा विभाग ने मुख्यमंत्री के दिशानिर्देश पर शुरू की गई सेहत योजना के बारे में बताते हुए कहा कि जो बच्चा विद्यालय में आता है कि उसकी सेहत की जाँच अवश्य होनी चाहिए। इसी को लेकर इस योजना की शुरूआत की गई है। जिन बच्चों को सुनने में कोई दिक्कत है, आँखों की रोशनी की समस्या है, वजन बहुत कम है, हाइट कम है, दाँतों की समस्या इत्यादि सभी बिंदुओं के आँकड़े संग्रहित किए जाएँगे तथा उसके अनुसार इन बच्चों का इलाज करवाया जाएगा। सभी अध्यापक इसे एक मिशन मानते हुए प्रत्येक बच्चे की स्वास्थ्य जाँच अवश्य करवाने मे सहयोग करें। इसके आँकड़े संग्रहित करने का मात्र एक ही उद्देश्य है कि यह देखा जाए कि विद्यार्थी के स्वास्थ्य में सुधार हो रहा है या नहीं। स्वास्थ्य में समस्या के कारण विद्यार्थी पढ़ाई से वंचित न रह जाए।

इस योजना से जुड़े राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कोटी, पंचकूला में अंग्रेजी प्रवक्ता सुरेंद्र राठी ने बताया कि इस योजना का लक्ष्य यह है कि शिक्षक बच्चे के स्वास्थ्य के बारे में भी उसी तरह सहायक हों जिस प्रकार अभिभावक होते हैं। शिक्षक बच्चे के लिए माता-पिता का पर्याय हैं। इसीलिए अध्यापक विद्यार्थियों की सेहत सुधार में अपना योगदान दे पाएँगे। ग्रामीण क्षेत्रों में तो यह योजना काफी लाभदायक है। उन्होंने बताया कि जब विद्यालय में बच्चे बीमार होते हैं तो गाँव में जो डॉक्टर उपलब्ध हैं उन्हीं से अपना इलाज करवाते हैं। क्योंकि पहाड़ी क्षेत्रों मे सुविधाएँ मैदानी इलाकों की अपेक्षा कम उपलब्ध होती हैं। इसलिए ऐसे दुर्गम क्षेत्रों के लिए यह योजना वरदान साबित होगी।

प्रवक्ता, अंग्रेजी
रावमा विद्यालय, टिक्कर हिल, पंचकूला

सेहत कार्यक्रम के मुख्य बिंदु

- राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के मार्गदर्शन में विशेषज्ञों, स्वास्थ्य कर्मियों तथा अध्यापकों के समूह द्वारा 25 लाख विद्यार्थियों की वर्ष में दो बार स्वास्थ्य जाँच
- बच्चे की स्वास्थ्य रिपोर्ट में किसी प्रकार की कोई कमी पाए जाने पर उन्हें अस्पतालों में विशेषज्ञ डॉक्टर्स को रेफर करने की व्यवस्था।
- हीमोग्लोबिन , एनीमिया, दृष्टि जाँच, दाँतों की जाँच, लंबाई, वजन वृद्धि एवं विकास के अन्य बिंदु शामिल।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अंतर्गत प्रत्येक बच्चे के होलिस्टिक रिपोर्ट कार्ड की व्यवस्था।
- जाँच के उपरांत बच्चे के पूरे विवरण का ऑनलाइन रिकार्ड ज़िले ई-उपचार पोर्टल से जोड़ा जाएगा।

सेहत कार्यक्रम पर एक नजर

- हरियाणा सरकार द्वारा अच्छी शिक्षा के साथ-साथ , विद्यार्थियों को स्वस्थ और निरोगी बनाने के लिए अनोखी पहल ।
- एनीमिया मुक्त भारत की दिशा में हरियाणा स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा एनीमिया मुक्त हरियाणा की एक मुहिम ।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सफल एवं निरंतर क्रियान्वयन की ओर हरियाणा सरकार का एक और मज़बूत कदम ।
- बच्चों के सही स्वास्थ्य व विकास में बाधा बनने वाली हर समस्याओं पर ध्यान जैसे- कमजोर नजर, मोटापा, एनीमिया यानि खून की कमी, असंतुलित भोजन, रहन-सहन, शरीर में पोषक तत्वों की कमी इत्यादि ।

सफलता के नित नए आयाम गढ़ता इस्लामनगर का माध्यमिक विद्यालय

राधेश्याम भारतीय

जब किसी विद्यालय का मुखिया विद्यालय सौंदर्यीकरण के लिए पहले ब्लॉक स्तर पर, फिर जिला स्तर पर सम्मानित होता है, तो क्या उस विद्यालय के स्टाफ सदस्यों एवं वहाँ के विद्यार्थियों का सीना गर्व से चौड़ा नहीं हो जाता होगा? अवश्य होता होगा। हो भी क्यों नहीं, क्योंकि वह सम्मान कोई वस्तु नहीं है, जो मूल्य चुकाकर प्राप्त कर ली गई हो। बल्कि वह सम्मान उनके द्वारा विद्यालय के सौंदर्यीकरण के लिए बहाए गए पसीने का प्रतिफल है। दिन-रात की गई मेहनत का परिणाम है। ऐसे सम्मान को पाकर केवल आनंद की अनुभूति ही की जा सकती है, उसकी अभिव्यक्ति शायद शब्दों में असंभव है। यह सम्मान जिस विद्यालय को मिला है उसकी कहानी जब आप पढ़ेंगे तो आप स्वयं कह उठेंगे, वाह! क्या विद्यालय है। हाँ, जैसे ही आपके कदम उस विद्यालय में पड़ते हैं तो उस विद्यालय में खड़े छायादार पेड, क्यारियों में भाँति-भाँति के खिले

फूल आपको सम्मोहित करेंगे और उन फूलों पर मँडराते भँवरे, मानो उस विद्यालय का यशोगान करते प्रतीत होंगे। वहीं गेट के साथ बच्चों के खेलने के लिए एक लम्बा-चौड़ा मैदान और उसी मैदान में विभिन्न प्रकार के झूले, जहाँ आधी छुट्टी में उन झूलों पर जब बच्चे झूलते होंगे तो ऐसा लगता होगा मानो वहीं आनंद की सरिता बह रही हो। विद्यालय का हर रास्ता दूधिया रंग की इंटरलॉकिंग टाइलों से जुड़ा हुआ। वे रास्ते भी जैसे हँसते-खिलखिलाते-से जान पड़ेंगे। और विशेष रूप से आपको रुकने के लिए विवश कर देंगे उसी रास्ते के साथ उगाए गए औषधीय पौधे। जहाँ लेमन ग्रास, कढ़ी पत्ता, स्टीविया (मधुरगुणा) तेजपत्ता, तुकमलंगा, नागदोन, पुदीना, धतुरा, छुईमुई, काला बांसा, मेहंदी, छोटी इलायची, शतावर, इंसुलिन पौधा, हरसिंगार जैसे पौधे उगाए गए हों, तो आप रुककर उन्हें न निहारो, ऐसा हो नहीं सकता। और कल्पना करें जब साइंस विषय के अध्यापक बच्चों को उन औषधीय पौधों के लाभ बता रहे होते हैं तो क्या सचमुच साइंस का एक प्रैक्टिकल वहीं पूर्ण न हो जाता होगा। वैसे भी कहते हैं, पढ़ने से देखना श्रेयस्कर होता है।

वहाँ से निकलने के बाद जब आपके कदम ऑफिस में पड़ेंगे तो सामने कुछ और ही नज़ारा होगा। आपको लगेगा ही नहीं कि यह मिडिल स्कूल का ऑफिस है, बल्कि लगेगा कि आप किसी सीनियर सैकेंडरी स्कूल में पहुँच गए हैं। बड़ी-सी चेयर, लम्बी-चौड़ी मेज, सामने स्टील की कुर्सियाँ और दीवार से साथ गद्देदार सोफे, फिर उनके सामने मेज। जैसे ही आपकी नजरें दीवार पर

पड़ेंगी तो आपको दिखाई पड़ेगी एलसीडी। उसके स्क्रीन पर दिखाई देंगी विद्यालय में हो रही समस्त गतिविधियाँ। यानि स्कूल में अनेक स्थानों पर कैमरे लगाए गए हैं।

और उसी के साथ जो दृश्य आप देखेंगे तो आपका विद्यालय पहुँचना जैसे सार्थक हो जायेगा। अशोक स्तम्भ की प्रतीकात्मक मूर्ति एवं शीशे में जड़ा निदेशक, मौलिक शिक्षा पंचकूला से मिला प्रशस्ति-पत्र जिस पर सुनहरे अक्षरों में लिखा है- मुख्यमंत्री स्कूल सौंदर्यीकरण योजना, हरियाणा प्रशस्ति पत्र-2016-17 । उस पर अंकित है- 'प्रमाणित किया जाता है कि राजकीय माध्यमिक विद्यालय इस्लामनगर, खंड इन्द्री, जिला करनाल ने मुख्यमंत्री स्कूल सौंदर्यीकरण योजना हरियाणा में खंड स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया।'

उस प्रशस्ति-पत्र को प्राप्त किया विद्यालय के तत्कालीन मुखिया श्री बिजेन्द्र सिंह ने। यह कहानी यहीं नहीं रुकी, बल्कि सफलता की यह कहानी आगे भी कायम रही। वर्ष 2022 में यही कहानी फिर दोहराई जाती है और फिर से खंड स्तर पर प्रथम स्थान अर्जित किया जाता है। इसके साथ विद्यालय ने सौंदर्यीकरण का परचम लहराते हुए उसने जिलास्तर पर भी प्रथम स्थान प्राप्त किया। जिलास्तर पर प्रथम आना चुनौती भरा कार्य का था, पर इस विद्यालय के मुखिया सतीश कुमार जी एवं स्टाफ सदस्यों (किशोर कुमार, सुनील कुमार, पृथ्वी, जयप्रकाश, राजेन्द्र कुमार, सतीश शर्मा, प्रियंका, गुरमीत कौर, श्यामो देवी, रानी देवी, बंटी, कर्मसिंह) ने उस चुनौती को स्वीकारा और विद्यालय में जिन संसाधनों की कमी थी उसके लिए पंचायत का सहयोग लिया गया। तत्कालीन सरपंच चौधरी रविन्द्र जी ने विद्यालय हित में दिल खोलकर सहयोग किया। बस फिर क्या था, विद्यालय

में रंगत बदलने लगी। उसी रंगत ने अधिकारियों का मन मोह लिया। और करनाल के सभी ब्लॉक को पीछे छोड़कर इस्लामनगर स्कूल ने जिला-स्तर पर अपनी श्रेष्ठता का परचम लहरा दिया।

उसके बाद जैसे ही आप कार्यालय से बाहर आते हैं तो सामने श्यामपट्ट पर लिखे मिलेंगे आज के मुख्य समाचार एवं सुविचार। इन दोनों का जीवन में अपना ही एक विशेष महत्त्व है। बरामदे में खड़े होकर जैसे ही आपकी नजर दूर तलक जायेगी, वहीं तक दीवार पर बने ज्ञानवर्धक चित्र जो बहुत कुछ कहते नज़र आयेंगे। कहते हैं, विद्यालय की दीवारें भी पढ़ाती हैं। यह बात यहाँ सच होती नज़र आती है।

आगे साइंस रूम में साइंस विषय के अध्यापक किशोर जी विद्यार्थियों को प्रयोग करवाते नजर आते हैं। आगे संस्कृत विषय के अध्यापक पृथ्वीराज श्लोकों का सस्वर वाचन करवा रहे हैं और बच्चे मनोयोग से सुन रहे हैं।

यदि दोपहर के भोजन की बात करें तो विभाग द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए पौष्टिक एवं संतुलित आहार परोसा जाता है। भोजन करने के बाद बच्चों के चेहरे पर छाई खुशी स्वयं सिद्ध कर देती है कि वहाँ की कुक बड़े ही मनोयोग से बच्चों के लिए खाना तैयार करती हैं। उसके बाद एक कमरे के दो पार्ट करके एक कमरे में पुस्तकालय की सुविधा बच्चों को दी गई। बच्चे वहाँ बैठकर इन पुस्तकों से अपने ज्ञान में वृद्धि कर करते हैं। इस कार्य को जयप्रकाश जी बखूबी निभाते हैं।

यदि वहाँ के शौचालयों एवं जल प्रबंधन की बात न की जाए तो बात अधूरी ही रह जायेगी। साफ-सुथरे शौचालय। सीटें शीशे-सी चमकती हुई। वहीं स्वच्छ जल का विशेष प्रबंध। पौधों, फूलों, मैदान में पानी देने के लिए टयूबवैल का प्रबंध। कुल मिलाकर हर प्रकार की सुविधा।

अंत में इसी आशा के साथ कि यह विद्यालय सफलता के नित नए आयाम स्थापित करे, हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

मौलिक मुख्याध्यापक
राजकीय माध्यमिक विद्यालय
खुखनी, इन्द्री, करनाल, हरियाणा

प्यारे बच्चो!

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- आपकी यामिका दीदी

माँ उड़ना सिखला दो

अपने नन्हे बच्चों से
बोली गौरैया रानी ।
दाने चुग झरने का निर्मल
पी लो मीठा पानी ।।

एक साथ बच्चे मिल बोले
ये दुनिया दिखला दो ।
दूर उड़ेंगे नीलगगन में
माँ उड़ना सिखला दो ।।

हम भी देखें दुनिया कितनी
लंबी और बड़ी है ।
कौन-कौन-सी चीजें इसमें
कितनी भरी पड़ी हैं ।।

बड़े प्यार से पर सहलाकर
चिड़िया थी मुस्काई ।
समय-समय पर सब सीखोगे
बात उन्हें समझाई ।।

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'
व्याख्याता हिन्दी
लहार, भिण्ड (मप्र)

पहेलियाँ

(1) एक गीत भारत का बच्चो,
हम सब की पहचान है।
52 सेकंड में गाया जाता,
भारत देश महान है।।

(2) बंकिम चंद्र चटर्जी ने गीत लिखा,
जिसकी मधुर तान ।
मन में साहस ये भर देता,
है भारत की शान।।

(3) चितीदार खाल है इसकी,
राष्ट्रीय पशु कहलाता है ।
बहुत तेज यह दौड़ लगाता,
वन में पाया जाता है।।

(4) मध्य हटे तो कल बन जाता,
अंत हटे तो कम।
राष्ट्रीय पुष्प सब कहते इसको
याद करो हरदम।।

(5) बाग बगीचों पर मैं नाचूँ,
और नाचूँ मैदानों में।
राष्ट्रीय पक्षी सब कहते मुझको
नहीं डरूँ तूफानों में।।

(6) दो अक्षर का मेरा नाम,
बहते रहना मेरा काम।
गंगोत्री है उद्गम मेरा,
बंगाल की खाड़ी मेरा धाम।।

(7) तीन रंगों का बना तिरंगा,
अजब अनूठी शान।
साथ अशोक चक्र भी इसमें,
भारत की ये आन।।

(8) माह नवंबर में इक आता,
प्यारा पर्व सुहाना।
सब बच्चे मनाते इसको,
गाते मिल खूब तराना।।

(9.) बच्चों के चाचा कहलाए,
बने देश की शान।
पीएम रहे अपने भारत के
है इनकी पहचान ।।

उत्तर - 1 राष्ट्रगान 2. राष्ट्र गीत 3. बाघ 4. कमल 5. मोर 6. गंगा नदी 7. राष्ट्रध्वज 8. बाल दिवस 9.जवाहर लाल नेहरू

डॉ. कमलेन्द्र कुमार
रावगंज, कालपी जिला जालौन
उत्तरप्रदेश, पिन-285204

पद की गरिमा व सम्मान

एक समय की बात है। जंगल में सभी जानवर मिलकर रहते थे। जानवरों के कार्य अनुसार समूह बने हुए थे व प्रत्येक समूह में जानवरों को अलग-अलग पद मिले हुए थे। शेर को राजा का पद मिला हुआ था। बड़े -बड़े जानवर जैसे-हाथी, चीता, जिराफ, लोमड़ी आदि को महामंत्री का पद व अन्य जानवरों को निम्न पद दे दिए गए।

समय के साथ-साथ महामंत्री पद पर आसीन जानवरों के व्यवहार में भी बदलाव आने लगा तथा वे निम्न श्रेणी के जानवरों के साथ दुर्व्यवहार करने लगे। निम्न श्रेणी के जानवरों ने उनके दुर्व्यवहार से तंग आकर विरोध करना शुरू कर दिया। अब ये बात जंगल में आग की तरह फैलने लगी। उच्च व निम्न श्रेणी के जानवर एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाने लगे। कोई भी मानने के लिए तैयार नहीं था।

महामंत्री पद पर आसीन जानवरों को अपने पद का घमंड था। अब तक जंगल के सभी जानवरों को इस लड़ाई के बारे में खबर हो चुकी थी। निम्नपदों पर आसीन जानवरों ने एकजुटता दिखाते हुए उच्च पदासीन जानवरों के विरोध में नारेबाजी व विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया। प्रदर्शन को देखते हुए उच्च पदासीन जानवर भी घबरा रहे थे लेकिन क्षमा माँगने में अपना अपमान समझ रहे थे। अब तक मामला काफी गंभीर हो चुका था।

निम्न श्रेणी के जानवरों ने मिलकर योजना बनाई कि हम सब को एकत्रित होकर जंगल के मुखिया के पास जाना चाहिए। सभी जानवर एकत्रित होकर वहाँ पहुँच गए। और सारी बातें बताईं। मुखिया ने सभी जानवरों को समझाया और कहा कि हमें किसी को छोटा या बड़ा नहीं समझना चाहिए। हमें अपने-अपने पद की गरिमा को बनाए रखते हुए एक-दूसरे के पद का सम्मान करना चाहिए। उच्च पदासीन जानवरों को विशेष नसीहत देते हुए कहा कि अगर आप अपने से निम्न पदों पर आसीन जानवरों का सम्मान करोगे तो बदले में वो तुम्हें अधिक मान-सम्मान देंगे। सभी जानवर खुश हो गए तथा एक-दूसरे की बातों को मानने पर सहमत हो गए।

ये सब बातें सुनकर सभी जानवर जंगल की ओर चल दिए। वहाँ पहुँचकर अपने मिले पदानुसार कार्यों को सुचारु रूप से करने लगे।

शिक्षा- हमें एक-दूसरे के पद का सम्मान करना चाहिए।

-कविता
प्राथमिक अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय- सराय अलावर्दी गुरुग्राम, हरियाणा

नारियल पानी

यामा, गगन, प्रणेश, सुहानी ।
आओ! पिएँ नारियल पानी।

देखो दुकानों- ठेलों पर
बिकता खूब नारियल फल है,
इसमें नारियल दूध भरा है,
दिखने में जो लगता जल है,

हल्का मीठा-मीठा सा है
अति सुस्वादु है इसका पानी।

नाम वानस्पतिक जान लें
कोकस न्यूसीफेरा कहते,
स्वास्थ्य बनाता है शरीर का
इसमें अनगिन गुण हैं रहते,

नियमित पिएँ तो हो जाएगी
बहु रोगों की खत्म कहानी।

कई खनिज मिलते हैं इसमें
फाइबर का अनुपम भंडार,
खूब गर्मियों में पीने से
सारी गर्मी देता मार,

दाँत - हड्डियों को सुदृढ़ कर
पिएँ शक्ति हो अगर बढ़ानी।

बड़े मज़े से पानी पी लें
अंदर कोमल गरी भी पाएँ,
फल को काट गरी मिल जाती
चटखारे ले-ले कर खाएँ,

नारियल दूध अल्प भोजन है
ले सकती हैं दादी-नानी।
आओ! पिएँ नारियल पानी।

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र
117, आदिलनगर, विकासनगर
लखनऊ- 226022 (उ.प्र.)

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

आदरणीय अध्यापक साथियो एवं प्रिय विद्यार्थियो! लीजिए प्रस्तुत हैं आपके लिए विज्ञान की विभिन्न रोचक गतिविधियाँ, जो निःसंदेह आपको पसंद आयेंगी।

1. मेरे बस्ते को कंधे पर लटकाने वाली तनियाँ चौड़ी क्यों?

कक्षा-8 में हर वर्ष बल एवं दाब पाठ पढ़ाते समय एक गतिविधि जरूर कराई जाती है। जिसका उद्देश्य होता है बच्चों को प्रायोगिक रूप में यह आभास करवाना कि यदि वस्तु का क्षेत्रफल कम होगा तो वह वस्तु बल लगने पर अधिक दाब डालेगी। इसके लिए किसी विशेष सामान की आवश्यकता नहीं होती। कक्षा में ही उनके स्कूल बैग से ही यह गतिविधि कर दी जाती हैं। उनके स्कूल बैग की कंधों पर लटकाने वाली तनियाँ चौड़ी व गद्देदार होती हैं। तनियों से बैग किसी एक विद्यार्थी के कंधों पर लटकवाया गया फिर उन तनियों की जगह साधारण-सी पैकिंग करने वाली रस्सी या सुतली बाँधी जाती है। अब इस तरह तैयार बैग को उसी विद्यार्थी के रस्सी या सुतली द्वारा उसके कंधों पर लटकाया जाता है तो विद्यार्थी एक दम से बता देता है कि अबकी बार मुझे कंधों पर बहुत चुभन महसूस हो रही है। इसका कारण है कि तनियों क्षेत्रफल कम हो जाने पर दाब अधिक लगने लगा है। जबकि बस्ते का भार जो कि बल का कार्य कर रहा है। दोनों केस में एक समान ही है। वे सब समझ गए कि इसलिए बस्तों व अन्य बैग्स की तनियाँ चौड़ी बनाई जाती है। ये यही प्रयोग बाल्टी से भी किया जाता है। बाल्टी को पानी से भर कर उठाया जाता है तो उसका हैंडल हथेलियों कर चुभता है, लेकिन यदि उस हैंडल पर एक कपड़ा लपेट दिया जाए उसका का क्षेत्रफल बढ़ जाने से चुभन अब पहले की अपेक्षा बहुत कम या न के बराबर होती है। इस गतिविधि को सभी विद्यार्थियों ने करके देखा और इस गतिविधि से विद्यार्थी आरोपित बल और उत्पन्न दाब के बीच संबंध स्थापित कर पाए।

2. जानेंगे कि हम कितने लंबे हुए-

जिस दिन विद्यालय में खंड स्तरीय खेलकूद मेला आयोजित हुआ तो उस दिन बहुत से विद्यार्थियों

को सेंटीमीटर में अपनी ऊँचाई (हाइट) नापने की आवश्यकता पड़ी। कक्षा 6 के विद्यार्थियों ने इसके लिए अपनी कक्षा में ही ऊँचाई नापने की स्केल दीवार पर बनायी। सभी विद्यार्थियों ने प्रत्येक 3 महीने के हिसाब से अपनी साइंस की कॉपी में अपना ऊँचाई व भार का रिकॉर्ड रखने के लिए एक पेज भी बनाया। कुछ विद्यार्थी तो अब रोज ही अपनी ऊँचाई नाप रहे होते हैं। यह गतिविधि कक्षा 6 से 8 में एक लोकप्रिय विज्ञान गतिविधि के रूप में प्रचारित हुई। कुछ विद्यार्थी यह भी पूछते हैं कि सर हमारी ऊँचाई कैसे बढ़ेगी? तब उन्हें पौष्टिक खाद्य पदार्थ, योग व खेलकूद के लिए भी प्रेरित किया जाता है व जंक फूड

न खाने की भी सलाह दी जाती है। विद्यार्थियों पर इस बात का काफी अच्छा असर पड़ता है।

3. प्रकाश सीधी रेखा में चलता है, पाइप से जाना-

प्रकाश सीधी रेखा में चलता है। इसको प्रायोगिक रूप से जानने के लिए विद्यार्थियों ने लेक्सी पाइप के कुछ टुकड़े लिए। उन्होंने कक्षा में टेबल पर मोमबत्ती जलाकर उस पाइप के द्वारा (सीधी अवस्था में रख कर) मोमबत्ती की ज्वाला को देखा जो कि उन्हें दिखाई थी। अब उन्होंने पाइप को बीच में से वक्राकार मोड़ दिया। इस प्रकार से मुड़े हुए पाइप से अब मोमबत्ती की ज्वाला दिखाई देनी बंद हो गई। इससे सिद्ध होता है कि प्रकाश सीधी रेखा में चलता है। सभी विद्यार्थियों ने यह गतिविधि खुद करके देखी।

4. एक पत्ते का जीवन चक्र-

किसी पत्ते का जीवन चक्र जानने के लिए विद्यार्थियों ने पेड़ से विभिन्न अवस्थाओं के पत्ते एकत्र किये। उन्होंने उनको नवजात पत्तों से लेकर मृत पत्ते तक अरेंज करके रखा और पत्ते के वृद्धि चक्र को जाना। विद्यार्थियों ने यह जाना कि नवजात पत्ता कितना मुलायम होता है उसके बाद जैसे-जैसे पत्ता बढ़ा होता जाता है उसके आकार के साथ-साथ रंग में परिवर्तन होता है। वह गहरे हरे रंग का हो जाता है। अंत में वह सूख कर गिर जाता है।

5. पहली व दूसरी श्रेणी के उत्तोलक (लीवर) को जाना-

कम बल लगाकर अधिक कार्य करना या कहा जाए कि कम बल लगाकर अधिक भार उठाना गतिविधि को समझने के लिए विद्यार्थियों को उत्तोलक (लीवर) के प्रयोग किए जाने बारे में बताया गया। इसका प्रायोगिक सत्यापन करने के लिए विद्यार्थियों को पहली व दूसरी प्रकार के उत्तोलक के बारे में गतिविधि करवाई गई। उत्तोलक या लीवर को एक सरल यंत्र (सिम्पल मशीन) कहा जाता है। उत्तोलक तीन प्रकार के होते हैं।

प्रथम श्रेणी का उत्तोलक जिसके उदाहरण कैंची, प्लास, कील उखाड़ने की मशीन व साइकिल का ब्रेक का सिस्टम। द्वितीय श्रेणी का उत्तोलक जिसके उदाहरण सरौता, नींबू निचोड़ने की मशीन व ईंट भट्ठे पर ईंटें ढोने

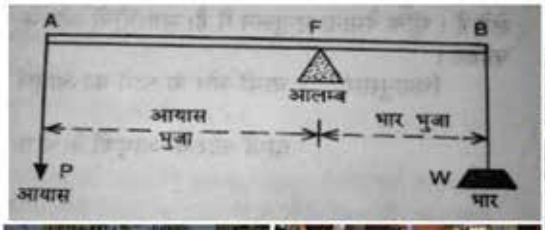

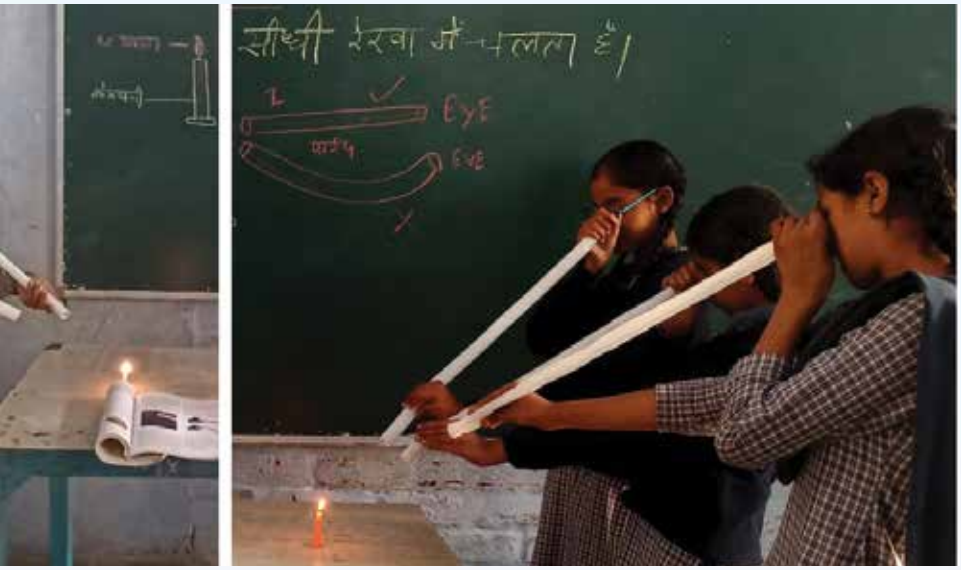

की गाड़ी व तृतीय श्रेणी का उत्तोलक जिसके उदाहरण चिमटा, किसान का हल, मनुष्य का हाथ, मुँह में दाँत जबड़ा।

विद्यार्थियों को सभी प्रकार के उत्तोलक समझाइए गये व उन्हें प्रयोग करना भी सिखाया गया। अब उन्हें उत्तोलक के तीनों बिंदु आयास, आलंब और भार के बारे में पूर्णतया स्पष्ट हो गया। इन्हीं तीनो बिंदुओं के स्थान बदलने पर नए प्रकार का उत्तोलक बनता है। विद्यार्थी कॉपी पेन लेकर किसी और नए प्रकार के उत्तोलक को बनाने का प्रयास करते नज़र आए।

अच्छा, तो आगामी अंक में फिर से मिलते हैं नई विज्ञान गतिविधियों के साथ ...

साइंस मास्टर/ ईएसएचएम
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय दामला
खंड-जगाधरी, यमुनानगर, हरियाणा

सेवानिवृत्ति के बाद भी सेवारत हैं कमला राठी

उनके अध्यापन के जुनून को देखते हुए उनके लिए कहा जा सकता है न रिटायर्ड और न टायर्ड...! एक ओर जहाँ अक्सर कुछ शिक्षकों की अध्यापन से जी चुराने की चर्चाएँ सुनने को मिलती रहती हैं, वहीं वे ऐसी शिक्षिका हैं, जिनका अध्यापन के प्रति समर्पण एवं जुनून देखते ही बनता है। सेवानिवृत्ति के बाद भी वे अपने पुराने विद्यालय में ठीक उसी प्रकार आवागमन करते हुए अध्यापन कार्य कर रही हैं, जैसे वे सेवानिवृत्ति से पहले कर रही थीं।

जी हाँ, हम बात कर रहे हैं रेवाड़ी जिले के गाँव नगली गोधा स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय से हिंदी अध्यापिका के तौर पर सेवानिवृत्त समर्पित शिक्षिका कमला राठी का, जिनका अध्यापन के प्रति निष्काम समर्पण शिक्षा विभाग तथा समाज के लिए प्रेरणापुंज बना हुआ है।

गुरुग्राम जिले के गाँव राठीवास निवासी श्रीमती राठी पिछले कई वर्षों से रेवाड़ी के सेक्टर-1 में रह रही हैं। 19 अप्रैल,1984 को शिक्षा विभाग में बतौर हिंदी अध्यापिका पदार्पित होकर उन्होंने रेवाड़ी जिले के विभिन्न स्कूलों में उत्कृष्ट सेवाएँ दीं, जिनमें चाँदवास, बिठवाना, रेवाड़ी, मीरपुर, नैचाना तथा नगली गोधा उल्लेखनीय हैं। गत 30 अप्रैल, 2022 को वे रेवाड़ी जिले के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नगली गोधा सी सेवानिवृत्त हुईं। सेवानिवृत्ति सम्मान समारोह पर उन्होंने अपनी इच्छा जाहिर की कि वे सेवानिवृत्ति के बाद भी बिना किसी मानदेय के विद्यालय में अपनी निःशुल्क सेवाएँ देना चाहती हैं, जिसे प्राचार्य तथा स्टाफ ने से सहर्ष स्वीकार कर लिया तथा बिना एक दिन का भी अवकाश किए वे 1 मई से विद्यालय में पूर्ववत् सेवाएँ देने लगीं, जो आज तक जारी है। इस दौरान भीषण गर्मी, खराब मौसम, तेज बारिश जैसी प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच भी उनका नियमित रूप से विद्यालय आना तथा अपनी सभी कक्षाएँ पूर्ववत् पूरे समर्पण से लेना विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के लिए एक बड़ी प्रेरणा रही है।

विद्यालय की प्राचार्या सरोज यादव के अनुसार वे विद्यालय के सेवारत अध्यापकों की भाँति अपने सभी दायित्वों का निर्वहन पूरे समर्पण और ईमानदारी से करती हैं। विद्यालय की रसायनशास्त्र प्राध्यापिका संतोष यादव का मानना है कि वर्तमान भौतिकवादी युग में ऐसे निष्काम अध्यापकों का अकाल है, उनसे हमारा पूरा स्टाफ बेहद प्रेरणा लेता है।

रेवाड़ी की जिला शिक्षा अधिकारी नसीब सिंह कहते हैं कि एक सच्चा शिक्षक कभी सेवानिवृत्त नहीं होता। उसे सेवानिवृत्ति के बाद भी सामाजिक अभियंता के तौर पर समाज में अपनी प्रेरक भूमिका निभानी चाहिए। विद्यालय को भी लघु समाज कहा जाता है, वस्तुतः श्रीमती राठी की यह पहल बेहद प्रेरक एवं सराहनीय है।

एक सवाल के जवाब में श्रीमती राठी कहती हैं कि जब तक स्वास्थ्य साथ देगा, वे हिंदी सेविका के रूप में अपनी सेवाएँ सरकारी स्कूलों में निःशुल्क देती रहेंगी।

सेक्टर-1, रेवाड़ी में उनके पड़ोसी सेवानिवृत्त प्राचार्य राम तीरथ यादव बताते हैं कि वे तथा उनका परिवार सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेता रहा है। उक्त हिंदी अध्यापन के अलावा आध्यात्मिक चिंतन, योगाभ्यास तथा गौ सेवा उनकी दिनचर्या के अभिन्न हिस्से बन चुके हैं। उनके पति अशोक राठी तथा उनकी एकमात्र पुत्री डॉ. मनीषा भी उनके सामाजिक सरोकारों में बहुआयामी सहयोग करते रहे हैं।

आज की भागदौड़ भरी आत्म केंद्रित जीवन शैली के बीच श्रीमती राठी का समाज तथा राष्ट्र निर्माण में निष्काम भाव से एक सच्चे अध्यापक की भूमिका का निर्वहन करना समाज तथा शिक्षा विभाग के लिए अपने आप में एक अनूठी मिसाल है, जिस पर शिक्षा विभाग तथा समाज गर्व कर सकता है।

सत्यवीर नाहड़िया
प्राध्यापक-रसायन शास्त्र
राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खोरी
जिला- रेवाड़ी, हरियाणा

वैज्ञानिक एवं तार्किक दृष्टिकोण

सेब तो हमेशा से ही पेड़ से ज़मीन पर गिर रहा था और अनगिनत लोगों ने उसे गिरते हुए देखा भी किन्तु कोई था जिसकी नज़र उन अनगिनत लोगों से अलग थी। जिसने सेब को नीचे गिरते देखकर सोचा कि आखिर ये नीचे ही क्यों आया...ऊपर आकाश में क्यों नहीं गया? फिर गुरुत्वाकर्षण बल की खोज हुई। ये थे आइजैक न्यूटन, और यही है वैज्ञानिक और तर्कसंगत दृष्टिकोण।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण के चार अंग हैं- अनुसंधान, विश्लेषण, छान-फटक और तार्किकता। जब इन चारों का सामंजस्य होता है तो जो परिणाम निकलता है, वह आह्लादित करने वाला अर्थात् कल्याणकारी होता है ।

इस संसार की हर खोज के पीछे इसी वैज्ञानिक और तर्कसंगत दृष्टिकोण की भूमिका रही है। जब तक हम लीक से हटकर नहीं सोचेंगे कुछ भी नया ईजाद नहीं हो सकता।

जीवन में कितनी ही ऐसी बातें हैं, अनगिनत ऐसी परंपराएँ हैं जिनका हम आँख बंद करके अनुसरण करते हैं। कभी हमारे दिमाग में यह विचार नहीं आता कि आखिर ऐसा है तो क्यों है? परंपराओं का निर्वाह आवश्यक है। कितनी ही परंपराएँ आदिकाल से बहती निर्मल धारा की तरह से हैं। ये हमारी संस्कृति, हमारी सभ्यता को पुष्ट करती हैं, किंतु उसके पीछे छिपी वैज्ञानिकता व तार्किकता की जानकारी भी हमें होनी चाहिए। पीपल की पूजा, तुलसी को आँगन में स्थापित करके उसको पूजना, सूर्य को अर्घ्य देना, नदी में ताँबे का सिक्का डालकर उसे प्रणाम करना, पतियों को रात में न तोड़ना... ऐसी कितनी ही परंपराएँ हैं जिन्हें धर्म-मज़हब के नाम पर हम निभाते हैं। ज़रूरी यह है कि हमारे दिमाग में यह प्रश्न पैदा हो कि हम इनका निर्वाह क्यों करते हैं?

शिक्षा के क्षेत्र में इस वैज्ञानिक और तर्कसंगत दृष्टिकोण की महती आवश्यकता है। विद्यार्थियों को प्रारंभ से ही ऐसा वातावरण दिया जाए कि वे जिज्ञासु बनें और तथ्यों को लेकर प्रश्न करना सीखें... इससे निश्चित ही बंद पट खुलेंगे। स्व. एपीजे अब्दुल कलाम इस तरह की शिक्षा के बहुत बड़े हिमायती थे। इसी दृष्टिकोण और वैज्ञानिक सोच के कारण उन्होंने एक साधारण झोपड़ी से राष्ट्रपति भवन तक का सफर तय किया। अगर बचपन से ही बच्चों के अंदर वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा किया जाए और ऐसा माहौल उन्हें दिया जाए कि उनकी सोच तर्कसंगत बन सके, तो दुनिया का नक्शा बदल सकता है। जब वे हर सही या गलत काम के पीछे के कारणों को जानने-पहचानने लगेंगे तो उनका प्रत्येक कदम सही दिशा में आगे बढ़ेगा और जीवन में उन्नति के नये-नये शिखर स्वागतोत्सुक हो उठेंगे।

शिक्षक की समाज के उत्थान में बहुत बड़ी भूमिका होती है। अत्यावश्यक है केवल पाठ्यक्रम पूर्ति को ही अपना लक्ष्य न बनाएँ! पाठ्यक्रम के साथ-साथ बच्चों की जिज्ञासाओं को भी शांत करने के लिए तत्पर रहें। बच्चों को प्रेरित करें कि कि वे लीक से हटकर सोचें। उनकी सोच का आधार वैज्ञानिक हो इसके लिए हर संभव प्रयास शिक्षक को करना चाहिए। विद्यालयों में ऐसे कार्यक्रम व प्रतियोगिताएँ निरंतर आयोजित किए जाने चाहिए जिनसे विद्यार्थियों का दृष्टिकोण वैज्ञानिक हो सके। यहाँ बात केवल विज्ञान विषय की नहीं है वरन प्रत्येक विषय को तर्कसंगत तरीके से विद्यार्थियों के समक्ष रखा जाए।

पिछले दो-तीन दशक में बहुत तेजी से ज्ञान-विज्ञान का प्रसार हुआ है। पहले मनुष्य 'कब' और 'कैसे' पर अधिक ध्यान देता था किंतु अब 'क्यों' महत्त्वपूर्ण हो गया है। जीवन में वाकई सफलता की मंज़िलें पानी हैं तो इस दिशा में और भी गंभीर होने की आवश्यकता है।

अशोक 'अंजुम'
सम्पादकः 'अभिनव प्रयास'
चन्द्रविहार कॉलोनी, नगला डालचन्द
क्वारसीबायपास, अलीगढ़-202001, उ.प्र.

2022

नवंबर-दिसंबर माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

1 नवंबर- हरियाणा दिवस
8 नवंबर- गुरु नानक देव जयंती
24 नवंबर- गुरु तेग बहादुर शहीदी दिवस
7 नवंबर-राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस
9 नवंबर-विधिक सेवा दिवस
11 नवंबर- राष्ट्रीय शिक्षा दिवस
14 नवंबर- बाल दिवस
1 दिसंबर- विश्व एड्स दिवस
3 दिसंबर- विश्व दिव्यांग दिवस
4 दिसंबर- भारतीय नौसेना दिवस
7 दिसंबर- सशस्त्र सेना झंडा दिवस
9 दिसंबर- अन्तरराष्ट्रीय भ्रष्टाचार विरोधी दिवस
10 दिसंबर- मानव अधिकार दिवस
14 दिसंबर- राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस
25 दिसंबर- क्रिसमस दिवस
26 दिसंबर- शहीद ऊधम सिंह जयंती
29 दिसंबर- गुरु गोबिंद सिंह जयंती

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत् की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Allow yourself to listen to your Body

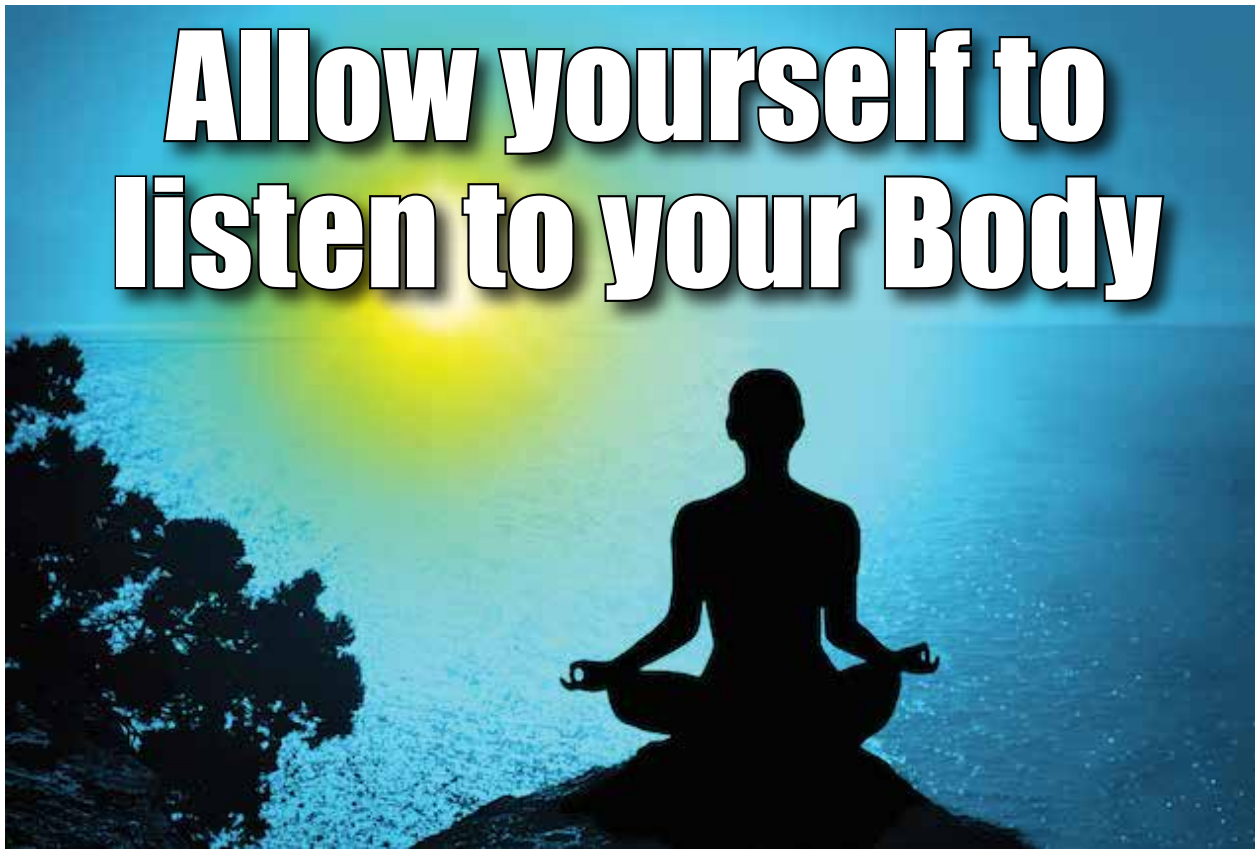

Dr. Himanshu Garg

According to the dictionary, Pain is an unpleasant or distressing sensation due to a physical injury or disorder as well as mental or emotional suffering. Pain is actually a feeling that tells us that something is wrong in our lives. Many of us live from day to day with unrelieved pain. Pain comes to us in many forms. It may be a scratch or a disease or a threat etc. It may be small i.e. bearable or large i.e. unbearable. Sometimes it hurts a little or sometimes it hurts a lot.

The human body is a wonderful piece of machinery. It tells us if there are problems but only if we are willing to listen. But mostly, we have no time to listen. The body is always aspiring for optimum health no matter what we do to it. If we do not treat our body well, we contribute to the conditions of our disease. When we feel pain anywhere, we usually rush to the doctor or to the medical store to buy a pain killer. In fact, by this act, we are shutting up the mouth of our body and ordering it that we don't want to hear it. In response, the body will quieten down for a short period and then start whispering again. This time the whisperings are little louder. At that time, sometimes we still don't listen and rush to the doctor again for a high dose or injection. Rather we should pay attention to what our body wants to say. The body wants to express the problem that has answers also. The answers may not come at that moment but they will be revealed to us very soon. Pay attention and let the answers pour in. Remember once we go about following directions, it is not necessary that pain disappears overnight or yet it may. Sometimes it takes some time to recognize. The answers may be as simple as getting a good night's sleep or not pushing yourself and overloading with work.Take rest for some days or take proper care.

You are unique and have your own way of handling your life. Be gentle to yourself and put your trust in your Higher Self to free yourself from all physical, mental and emotional pain. Allow yourself to listen to your body because it wants to be healthy. We must cooperate with the body to live a healthy and painfree life. If we follow the changes and directions given by our body, it gives us a safe, long and healthy life.

Assistant Professor,
Govt. College for Women, Jind
Himanshujind@yahoo.com

'Cyber Jagrookta - Safe Use of Internet, Gadgets and Media'

Rakesh Kumar

Internet, gadgets and media are very useful in our daily life. Now they are very important in the life of students also. They have changed the way we live life along with study techniques of students. However, they also become a dangerous tool for students. Along with knowing about the dangers of Internet,gadgets and media, today we will discuss about how we can avoid these dangers. You all must have heard the commonly printed word in Newspapers "Cybercrime" nowadays.

Cybercrime is such a criminal activity in which fraud is done through computer, network device or Internet, due to which cyber criminals steal privacy and money from the account. along with crimes like data hacking, phishing mail, OTP fraud, mobile fraud and sextortion.

Whenever we use Internet, gadgets and media, we need to be careful. We need to protect ourselves from cybercrime, Identity theft and other online threats. Here are 10 ways, which will help you to be safe online.

1.) Be aware of your surroundings-

Whenever you use the internet or any device connected with internet, be careful of the people around you,

don't have any kind of activity or conversation with them that puts you in danger.

2.) Use a virus protected device-

Viruses can damage and steal your data, so it's important to use a virus protected device. For this we must have good quality antivirus installed in our device.

3.) Use a firewall-

We must use any recognised firewall to protect our data theft. A firewall is a network security device that monitors incoming and outgoing network traffic and decides whether to allow or block specific traffic based on a defined set of security rules.

4.) Make sure your internet connection is secure-

Whenever you use a public network, keep in mind that network should be secure. Avoid making personal transactions at public networks. Always use a Virtual Private Network or VPN if it's necessary. This protects any data you send over an unsecured network.

5.) Use a strong password-

We should always create a strong password that is hard to guess. Make sure your passwords are long and made up of at least 12 characters and ideally more a mix of characters upper- and lower-case letters plus symbols and numbers.

6.) Check that websites look and feel reliable-

For any website you visit,a key element to look out for is an up-to-date security certificate. Always check URLs that start with 'HTTPS' rather than 'HTTP' (the 's' stands for 'secure') and have a padlock icon within the address bar.

7.) Be careful where you click-

Check the validity before clicking on any link when you are completely satisfied.

8.) Be aware of phishing scams-

Don't respond to any emails that you don't recognize or don't feel comfortable with. Phishing scams are emails that try to trick you into revealing personal information such

as your bank account number or login credentials. Report any suspicious emails to your online security provider immediately.

9.) Be careful what you download-

Some common malware apps are used to fool users by providing some attractive links on the web page like- popular game, traffic information, whether information and lottery etc. When we click on this type of link then malware apps get installed on our system by which our confidential information reaches them.

10.) Close unused accounts-

We all make a common mistake in the use of the internet, that we do not close our old internet accounts. Cybercriminals can harm us by collecting some important information like date of birth, Aadhar card number, address, location etc. from the old account. That's why we should close all unused internet accounts.

PGT Chemistry,
Govt. Model Sanskriti Sr. Sec. School, Dholera (M./Garh),Haryana

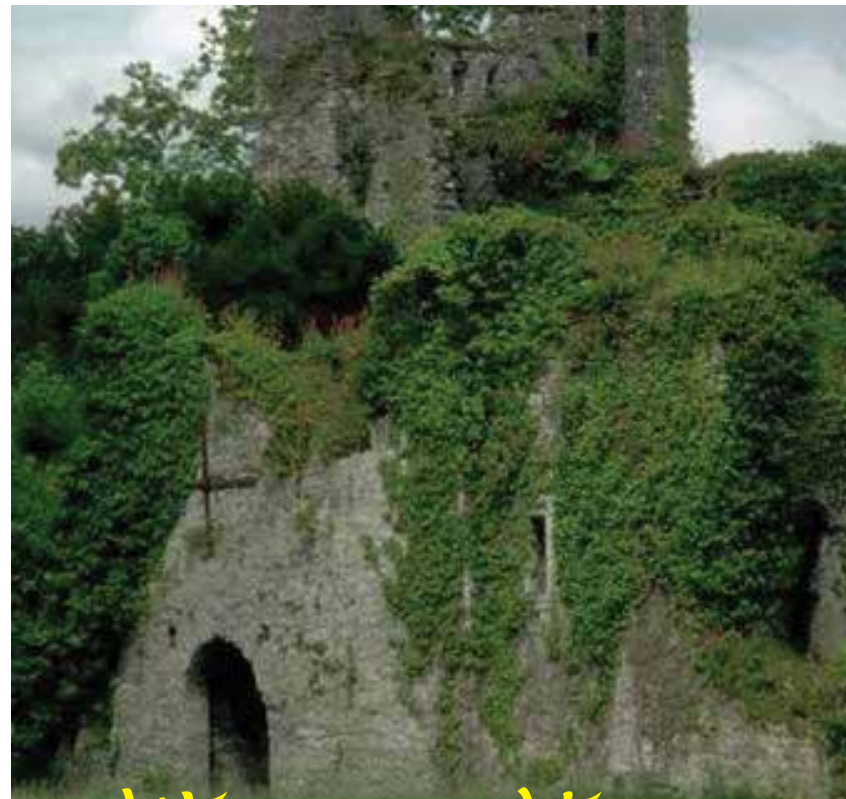

WinsomeVines

Some people are like trees,
And some are like vines.
They just latch on for free,
And into our worlds entwine.

While we grow and prosper,
They creep and crawl.
On good old sturdy trees,
And ancient ruins they sprawl.

The trees don't seem to mind,
These clingy green vines.
That seem to say all is mine,
That once was thine.

As long as they can share the sunshine,
The world would not be as sublime.
Without these winsome wines,
In Mother Nature's plan divine.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

STRESS AMONG TEENAGERS

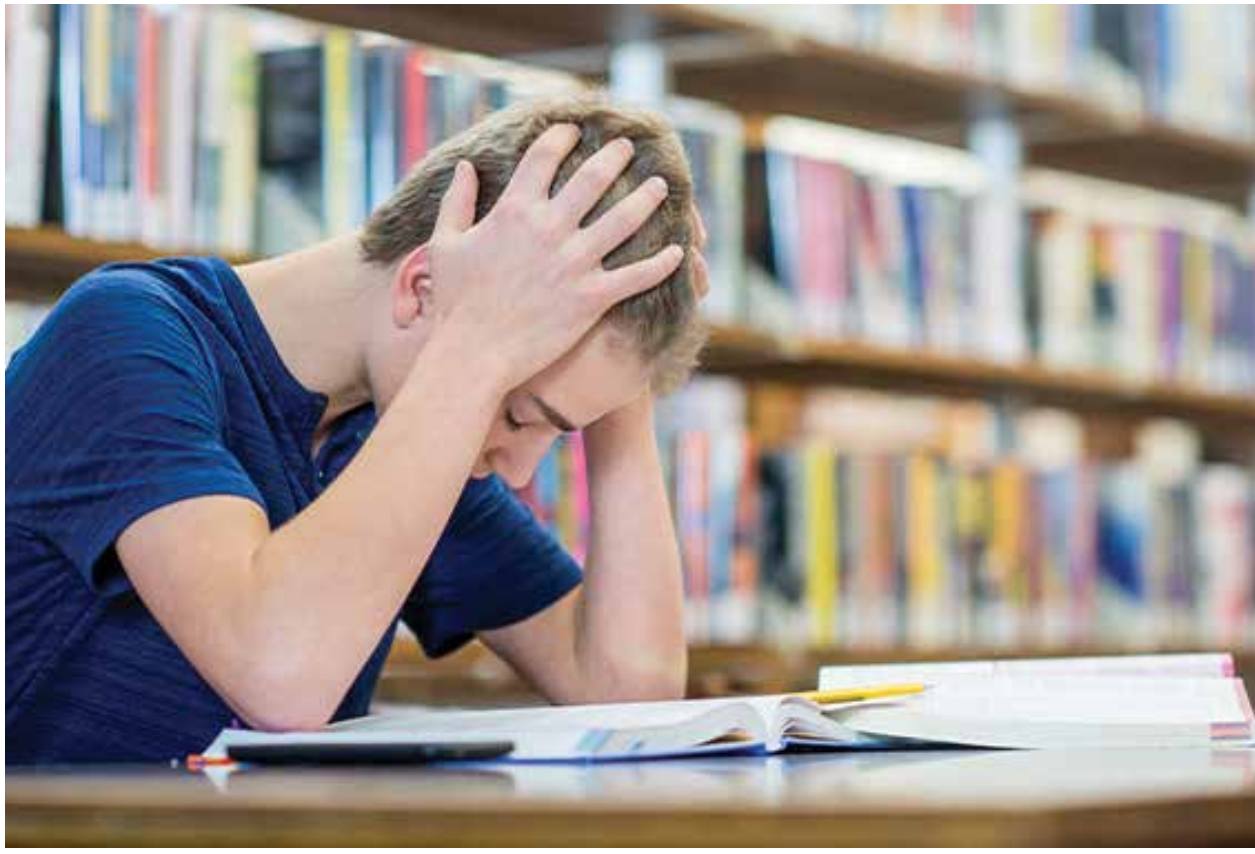

Dr. Predeep Shyam Ranjan

Stress is an umbrella term for various problems. It is psycho-physiological response of organism towards the external or internal demands attributed as a threat. How a person reacts to an incident is the result of his or her perceptions and his or her perceived ability to deal with it. Generally, it is assumed that only negative incidents produce stress. In reality, "stress comes from any situation or circumstance that requires behavioral adjustment. Any change, either good or bad, is stressful, and whether it's a positive or negative change, the physiological response is the same" (Lazarus, 2000). Stress is divided into two types: positive stress (eustress) and negative stress (distress). Winning a competition, marriage, purchasing a new home, job promotion, making new friends are some examples of eustress. Distress is known as negative stress. Death of a loving one, divorce, break-up, failure in exam etc. are examples of negative stress.

Stress can lead to physical and mental health problems, such as depression, coronary heart disease and anxiety disorders. Long-term stressful situations can produce a lasting, low-level stress that can wear out the body's reserves, weaken the immune system, and make an adolescent feel depleted. Stress is not always bad. To achieve a target, a minimum level of stress is always required. In fact it motivates and energizes us to achieve the target. The stress response prepares a person to react quickly and perform well under pressure.

Teenagers are more vulnerable to stress because they have a lack of experience to deal with the problems and the pre¬frontal cortex (the part of the brain that can calmly assess danger

and call off the stress response) is not fully developed. But stress reactions in teenagers are not abnormal, and even desirable. These stresses help them to clarify their values and to cope with future problems more effectively. Some important sources of teen stress are given below:-

- **Age Related: -** Physical, emotional and cognitive changes in teen age are the major source of stress. Body building is linked with temperament and personality. Appropriate development in different aspects develops positive self-image and inappropriate physical, emotional or cognitive changes may develop negative tendencies in teenagers.
- **Home Related: -** Poor nutrition, poor relationship with parents, change in the family's social-economic status, unclear or high expectations of parents etc. are some important factors related with teenager's stress. Biggest problem of present scenario is that parents do not have sufficient time for children because of business or service. So, at home, nobody is free to listen to their problems.
- **School Related: -** It is the school where teenagers spend their maximum time after home. Career confusion, after school or extra classes, rejection by teachers or classmates, over expectation of teachers as well as parents, conflict with teachers or classmates, grades, being bullied or exposed to violence or sexual harassment are some examples of school related stressors.
- **Peer Pressure: -** Teenagers have to show conformity with their group members and in this process many times they develop negative tendencies. If these tendencies do not match with their personality traits it creates pressure. For example pressure to wear certain types of clothing, jewelry, or hairstyles, experiment with smoking or drugs, alcohol, or sex, having a particular body shape or size can be stressful for many teenagers.

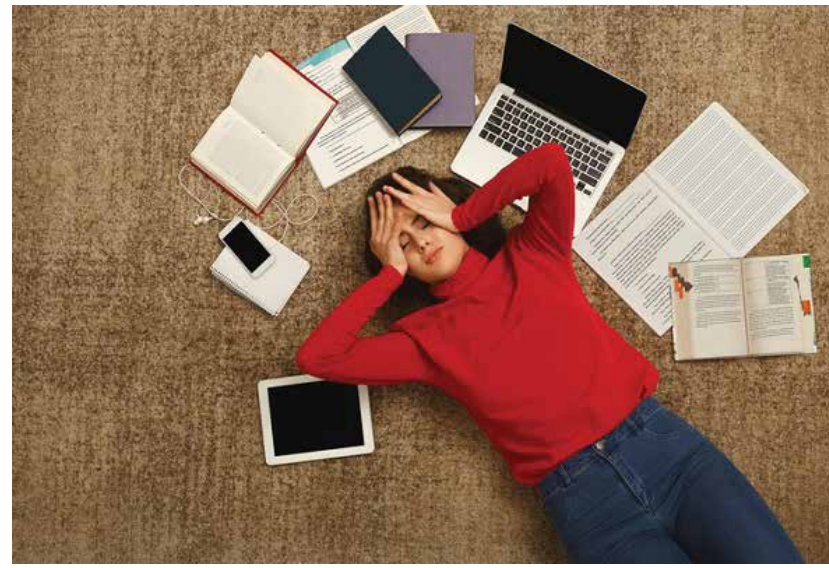

- **Information Technology and Media: -** Now-a-days teens are pro-technology and due to advanced technology and easy excess of internet they have lot of information about different aspects of life. But this information is unfiltered. Pressure creating news channels, expectation provoking reality shows, Social Networking Sites all are sources of stress for many teenagers. Teenagers who use social sites more often are more likely to display narcissistic, antisocial, aggressive, and depressive traits.

STRESS MANAGEMENT

Stress is the reality of life. Nobody can be stress-free. There is no any single solution for stress. But there are ways by which stress can be managed.

1. **Health Management: -** To cope-up with stress requires sound health. But always remember that stress doesn't come from what's going on in life. It comes from thoughts about what's going on in life. Nutritious diet, physical exercise, outdoor sports activities, meditation, yoga and proper sleep are helpful to improve and maintain your health.
2. **Time Management: -** Procrastination is the best way to invite stress.Managing time is an effective way of avoiding stress.

Symptoms of Stress in Teenagers

Physical	Psychological
• Increased complaints of headache, stomach ache, muscle pain, tiredness; • Drug or alcohol experimentation; • Changes in sleeping and eating habits; • Increased heart rate and blood pressure.	• Increased anger or irritability; • Sense of loneliness and isolation;Social isolation; • Crying more often and appearing teary-eyed; • Lack of concentration; • Chronic anxiety, fear and nervousness; • Mood swings; • Increased negative mood and rebellion; • Procrastination

Managing time takes practice. Develop the habit to complete work in a time-bound frame. Practice asking oneself this question: "Is this what I want or need to be doing right now?" If yes, then keep doing it.

3. **Positive imagery and self-talk: -** We all have an internal, automatic and silent conversation with ourselves, in our mind, almost all of the time. Some of our self-talk comes from logic and reason. Other self-talk may arise from misconceptions that we create because of lack of information. These automatic thoughts can be positive, negative or neutral. It influences our feelings and behaviour.

Some Examples of Negative Self-Talk

- "Things never go right for me."
- "I'm useless."
- "I'm no good", "I am bad."
- "I am a failure."
- "I am worthless."
- "Others are better than me."
- "Nobody likes me."
- "I'm not popular."
- "Why does this always happen to me."
- "I'm stupid."
- "I'll never be able to learn this."
- "I'll never get better."
- "The worst always happens to me."

Research has shown that positive self-talk helps to reduce stress. We should be aware of our own 'negative self-talk'.

4. **Talk about problems with significant others: -** Sometimes, just discussion of our problems with our close ones is enough to release our negative emotions.
5. **Lower unrealistic expectations: -**Evaluate/analyse your expectation level. It should be in accordance with your ability.
6. **Don't think about the things that are beyond control: -** There are two types of things, first the things those are under your control, which you can modify, change or manipulate second the things that are beyond your control. Thinking about second type of things is futile.
7. **Give up on the idea of perfection: -**Perfection is nothing but madness. It is stress-pro behaviour. Try to do your best but don't try to be perfect, because nothing can be perfect. Modification is always possible. So be ready for innovative ideas.
8. **Avoid comparisons: -** Comparing yourself with others is fruitless especially in a stressful situation. Whenever you compare yourself with others you disregard your personality also. Prepare the standard of your performance in different aspects.
9. **Quit back: -** If you have tried your best to solve a particular problem and you are not getting a solution, leave it for some time. The solution will come at an appropriate time.
10. **Group activity: -**Engage yourself in group related activities like participating in outdoor games. It is very helpful in reducing stress.

HOW PARENTS/CARETAKERS CAN HELP

1. Talking is the best solution for many problems. During talking don't be judgmental, just listen carefully. By talking you will be able to understand the real problem of your ward.
2. Beaware of your child's behaviour and emotions.
3. Build trust with your child and encourage him or her to express the feelings.
4. Teach and model good emotional responses.
5. Encourage healthy and diverse friendships. Always encourage your ward to make good real life friends instead of Facebook friends.
6. Encourage physical activity, good nutrition, and rest.
7. Monitor television programs that could worry your child and pay attention to the use of computer games, movies, and the Internet.
8. Help your child to select appropriate extracurricular activities and limit over-scheduling.
9. Contact your child's teacher with any concerns and make them part of the team available to assist your child.
10. Seek the assistance of a physician, school psychologist, school counselor, or school social worker if stress continues to be a concern.

Lecturer Psychology
Baldev Vidyapeeth Inter college
Sevara, Ayodhya, (UP)

A Real Hair Raising Tale

Dr. Deviyani Singh

When I was 12 years old I fell off a horse and came crashing to the ground hitting the back of my head. Now you might wonder what this has to do with hair? But apparently my Mom noticed the next day that I had sprouted a grey hair. She automatically concluded that the knock I took and activated my grey cells prematurely. She also concluded that the fall had something to do with me not growing tall after that. She never thought that the problem could be just genetic because I noticed many people from my village had a full head of hair but totally grey and some were short too. I used to hate it when we used to go to our village in Haryana and the elders there would show love by running their hands over my head. I told her that was the reason that probably turned them white which she didn't like very much.

As the years went by my grey hair also began to increase though i still had and have a very lustrous thick growth. We found a solution - Mehndi. This worked fine till I had too many grey hairs and began to look like a carrot top. This was before it was fashionable to put hair dye and brands like Loreal came into India. Loreal enticed us with names like Mahogany, Iced Chocolate, Black Cherry,Caramel,Mochaccino, Chestnut Honey etc. Which sound more like goodies to eat or drink then chemical hair dyes. They made us believe we are worth it!

My family has always been obsessed with hair of all kinds. My brothers like typical North Indians were very hairy which is considered by some as a sign of virility! But their 'fur' as I liked to call it created a lot of trouble for them in the summer. They even tried using my Mom's hair removing cream before they were allowed to shave. When we went swimming the hair on the backs prompted the kids in the pool to say - 'Bhalu agaye'.

When I enjoyed their plight they took their revenge on me by pointing out that I being the female of the same species, was not very different. As I went through adolescence they made my life miserable by pointing out that I had hairy legs and needed to wax them. I wore long socks in school to cover them up. But in Matric I finally got fed up of my brothers teasing and went and got my legs waxed. I still remember the burning sensation I got for the first time I waxed it felt like my legs were on fire. I felt like a million ants were biting my legs. I had to use ice to feel normal again.

They also taunted me about the hair that began spouting on my upper lip. They would tease me mercilessly, twirl their moustaches and mouth a regal tune like trumpets blowing every time I passed saying - "Here comes the great Rajput warrior Maha Rana Pratap." So one day I just got hold of a thread and removed my moustache. The reaction I got from my brothers after that was well worth the effort and pain. They

told me now I finally look like a girl.

My brother had so much hair on their legs that when a mosquito came to bite him it would get trapped in his hair. He would enjoy watching it struggle to get free. He had wavy hair and a kiss curl right in the middle of his forehead which he hated. He was always trying to straighten his hair but it kept curling back. Then one day he found a solution. He actually had an over bite and misaligned jaw and was told by the doctor to wear an orthodontic head band with traction jaw plate at night while he slept. But he found the head band too uncomfortable so he used to wear my mom's pilots skull cap which she used when she was learning how to fly an old biplane - the Tiger moth. When he removed it in the morning he found his hair perfectly set with no curls. So he continued using it while sleeping to set his hair long after his jaw problem was solved.

He was scared to wash his hair often for fear of getting back the dreaded curls. One day we went for swimming. Unknown to us the pool had not been cleaned in a long time. When my Dad examined my brother's head in the shower room he found green algae in it. He panicked thinking he had not

washed it for too long and got fungus. He gave him a severe scolding. It was only later that we discovered that the algae had stuck to his hair when he dived in the deep end of the pool.

When I married, by a strange quirk of fate, my husband turned out to be of the same species as my 'hairy bear'

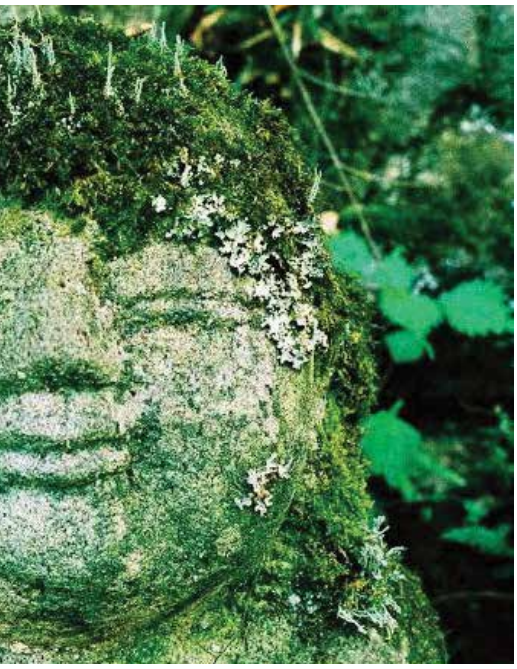

family. He also had the same problem of a hairy back which he asked me to shave much to my distaste. One day he ordered a Laser Hair Remover online. He paid Rs. 12,000 but the laser never turned up and we were duped by the fraudsters. Now my son has taken over the duty from me much to my relief.

My son had a passion for red hair maybe from watching too much of the GoT series, (Game of Thrones) Seems like we had come a full circle. I was reminded of my orange mehndi hair colored days. Although he has very fine brown hair, one day I don't know what got into him but he went and had his hair colored a bright red. Seeing him I turned red in the face with anger. It was not allowed in school so I dragged him back to the hair dresser and reprimanding him for doing that to a school going kid. They had to dye his hair black again.

These are my family's real hair raising tales. I do hope you enjoyed reading them as much as I enjoyed writing them.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

Celebrations

There blows an expectant cool zephyr,
Magical fragrance of Jasmine fills the air.
The most anticipated pleasant time of the year,
Navratras, melas, all festive celebrations are here.

Devotees of Lord Ganesh flood the streets,
Enthralling all with their dahi-handi feats.
The hustle bustle of worshipers as drums roll,
Durga puja pandals adorned, full of sacred smoke.

Colourful giant paper-mache effigies line the sky,
Dusherra fireworks thunder as the arrow is fired.
The time to shun wicked forces of the devil.
The God's eternal victory of good over evil.

Then come slight shivers, a certain nip in the air,
As days grow colder and we pull out winter wear.
Clean the house and buy new clothes to wear,
Time for rangolis, visit and gift all near and dear.

Earthen lamps glow, a twinkling carpet of stars below.
As the fairy-lit nights are longer and days darker grow.
Heart's delight as Diwali comes sparkling all aglow.
Radiating warmth even as celebrations draw to a close.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

Engineering

Engineering involves the terms like maintenance, design, invent, build, process, improve, system, material, devices and machine. It contains the information of all above topics. There is a lot of chances for a good career in engineering after 12th standard. Choose the engineering branch from the given list:

Computer Science and Engineering

Computer Science & Engineering is a rapidly growing field in engineering. It covers complete information about computer and computational processes. It is one of the sought branches of engineering. It provides good career opportunity for the science students. The popular work fields in CSE are database management, networking, core programming, web designing and software development.

Course Type: Diploma/Degree
Duration: 3 Years/4 Years
Salary: 2.5-3.5 lakh per Annum (for freshers)
12th Stream: Physics, Chemistry, Mathematics
Career Interest: IT, Computer

Civil Engineering

Civil engineering is one of the oldest and reputed fields of engineering. In simple words, it means the use of physical and scientific principles for the overall development of the society, of which physical structures is an integral part. It provides knowledge and art that directs human power in development for the wellbeing of humans. It is basically the art of planning, design & construction of roads, buildings, township, port and every man-made design. The work fields are construction companies, city planners, mega builders etc.

Course Type: Diploma/Degree
Duration: 3 Years/4 Years
Salary: 3-5 lakh per Annum (for freshers)
12th Stream: Physics, Chemistry, Mathematics
Career Interest: Civil, Construction

Mechanical Engineering

Mechanical Engineering is one of the oldest disciplines of engineering study.

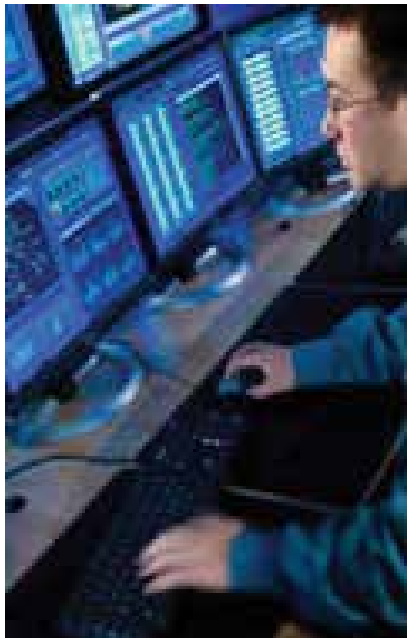

It involves the design, maintenance, analysis and manufacturing of mechanical system. There are lots of job opportunities in this field. You can work in production, manufacturing, development and service industries as an engineer in various domains.

Course Type : Diploma/Degree
Duration : 3 Years/4 Years
Salary : around 3-5 lakh per Annum (for fresher)
12th Stream : Physics, Chemistry, Mathematics
Career Interest : Mechanical fields

Electrical Engineering

Electrical engineering is very popular field of engineering. It provides the knowledge of distribution and utilization of energy that runs our world. It is the field of great scientist "Thomas Edison". You can work with the power grid systems, electrical & electronics equipment manufacturing companies.

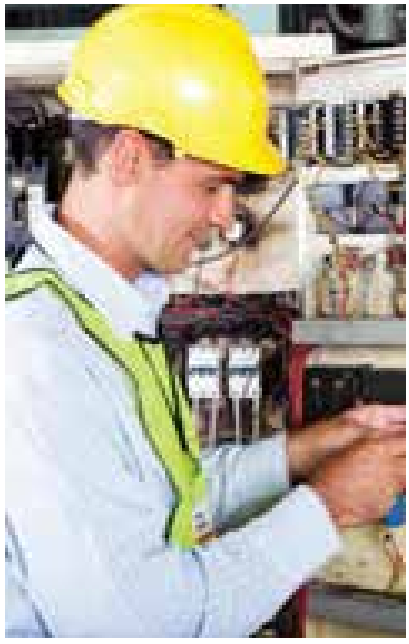

Course Type: Diploma/Degree
Duration: 3 Years/4 Years
Salary: around 3-5 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest: Electrical fields
12th Stream: Physics, Chemistry, Mathematics

Electronics & Communication Engineering

Electronics & Communication Engineering is one of the fastest growing disciplines of engineering. ECE is an interface of information technology and chip level hardware. It provides the knowledge of electronics devices and software application. All telecom and software industries are the work fields for the ECE engineers. It has a good job opportunity in private and government sector.

Course Type: Diploma/Degree
Duration: 3 Years/4 Years
Salary: around 3.5-4.5 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest: Electrical & Electronics Fields
12th Stream: Physics, Chemistry, Mathematics

Biotechnology

Biotechnology is the combination of the knowledge of biology and engineering for research & development in the field of agriculture, medical and security. There are job opportunities in the field of animal husbandry, pollution control, disease

research, development of medicine and pesticides.

Course Type: Diploma/Degree
Duration: 3 Years/4 Years
Salary: around 2.5-3.5 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest: Bio-research & Technology
12th Stream: Physics, Chemistry, Mathematics/Biology

Electrical & Electronics Engineering

Electrical & Electronics Engineering is an emerging discipline of engineering study. It leads the knowledge of electrical engineering and electronics engineering in one domain. It deals with the generation, use and storage of power and energy. The work fields are all industries related to the power and electronics devices.

Course Type: Diploma/Degree
Duration: 3 Years/4 Years
Salary: around 2.5-4.5 lakh per

Annum (for fresher)
Career Interest: Electrical & Electronics fields
12th stream: Physics, Chemistry, Mathematics

Aeronautical Engineering

Aeronautical Engineering is one of the best paid engineering fields. It includes the study of the machines which moves in the earth and in the space. Aeronautical engineering is the disciplines where we learn the mechanism of airplanes, airspace process, air shuttle & bullet trains. You can work with the government and private aviation manufacturing, research and testing industries.
Course Type: Diploma/Degree
Duration: 3 Years/4 Years
Salary: around 5-6 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest: Aerospace and Aeronautics
12th Stream: Physics, Chemistry, Mathematics

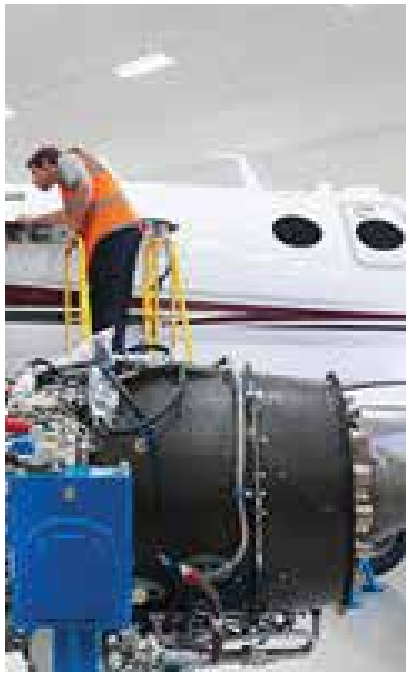

Agricultural Engineering

Agricultural Engineering is one of the reputed engineering branches. It provides the knowledge of technology which involves agricultural development and research. An agriculture engineer can work with agriculture research lab, agricultural enterprises, and botanical research lab and soil industries.
Course Type: Diploma/Degree
Duration: 3 Years/4 Years
Salary: around 2-3 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest: Crop and Agriculture
12th Stream: Physics, Chemistry, Mathematics

Petroleum Engineering

Petroleum Engineering is the emerging field of engineering study. Petroleum engineering deals with the production, exploration and understanding of natural gas and crude oil. It is a good paid engineering discipline. A petroleum engineers can work with the drilling plant, rigs, petroleum industries, petroleum refineries and related organizations.
Course Type: Diploma/Degree
Duration: 3 Years/4 Years
Salary: around 4-6 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest: Chemistry & Drilling
12th Stream: Physics, Chemistry & Mathematics

Food Technology

Food Technology is the rapidly growing discipline in the field of engineering & technology. It is one of the most popular branches at present.

Food technology involves the process of manufacturing and preservation of foods. It also involves the research in food science. You can work with the food MNCs and packaging industries as food inspector, quality manager, food auditors and production manager.

Course Type: Diploma/Degree
Duration: 3 Years/4 Years
Salary: around 2-3 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest: Food processing
12th Stream: Physics, Chemistry & Mathematics

Textile Engineering

Textile Engineering deals with the principles to control and design of fiber, apparel process, textile and products. It is one of the top positioned engineering branches. Textile engineering also involves the man-made and natural material, material – machine interaction, health conservation, waste and pollution control and safety. You can go for the textile industries which are the 14% of all industries in India.

Course Type: Diploma/Degree
Duration: 3 Years/4 Years
Salary: around 2-3 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest: Textile

12th Stream: Physics, Chemistry, Mathematics

Chemical Engineering

Chemical Engineering deals with the operation and development of the process for chemical and production of related substances. It is one of the good paid engineering fields. Chemical engineering involves the design, supervision, installation of equipments, workers and plant in related field. It is the combination of chemistry and engineering to solve the problem in chemical production.

Course Type: Diploma/Degree
Duration: 3 Years/4 Years
Salary: around 2.5-4.5 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest: Chemistry
12th Stream: Physics, Chemistry, Mathematics

Management

Management is one of the highly job oriented career field. It is one of the most popular field among the students. Management involves regulation and maintenance of overall functioning and administration of an organization. Management field provides responsible, challenging and respectful position to an aspirant who wants to work in the corporate environment. It has various disciplines & specializations and has opportunity for global employment.

BBA - Bachelor of Business Administration

BBA is a business oriented course which helps the students in understanding the basics of business and overall management process. The students can choose this course after class 12th, if they want to make their career in the management field. The students can work in management firms, business organizations and IT companies.

Course Type: Degree
Duration: 3 Years
Salary: around 2-4 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest: Business
12th Stream: Science, Commerce, Arts/Humanities

MBA - Master of Business Administration

Business administration is one of the most challenging and respected job fields. It involves the planning, strategy, implementation, policies, design, administration, maintenance, control and structure of any business. It provides an individual an opportunity to showcase his talent in the corporate field and offers handsome salary as per the caliber of the individual. After the completion of this course, the candidate can choose the corporate sector, IT industries, manufacturing units, various corporations, and global industrial world.

Course Type: Degree (post graduation)/Integrated Course
Duration: 2 Years/5 Years
Salary: around 3-5 lakh per Annum (for fresher)
Career Interest: Business
12th Stream: Science, Commerce, Arts/Humanities

Marketing Management

Marketing management is the oldest discipline of management study.

It is the one of the highly job oriented specialization of management. It involves the market strategy, market availability, product compatibility, market research and market economy of the business and product. By the growing technology and computerization, digital market is also the simultaneous part of the marketing field. There are lots of opportunities to work with various manufacturing industries.

Finance Management

Finance management is one of the challenging specializations in the field

of management study. It is one of the famous management fields among the commerce students in India. Finance management involves the resources, expenditure and balance of the economy and capital for an organization. Finance department is the back bone of any industry and finance analysts, finance executive, finance manager and finance officer play vital role in an organization.

Human Resource Management

Human resource management

is another popular specializations in the field of management study. Human resource manager deals with the workers and employees of the company. The HRM plays the crucial role in facilitating and monitoring the connectivity of workers, training of employees, their salaries, issues, benefits, allowances and recruitment of new employees. It is a very responsible field. HRM manager can be hired in any organization wherein the manpower works.

International Business Management

Today, the business scenario is not limited up to the national boundaries.

The business is now conducted globally across the nation boundaries. Due to the rapid rise in the global business, the demand of the professionals is increased in various MNCs and reputed organizations who are looking to conduct their business globally. International Business management is becoming a popular specialization among the students day-to-day. It provides the opportunity to work with the global market. This field pays good salary to the deserving candidates who have excellent communication skills and are ready to work in a challenging environment.

Operation Management

Operation management is a wide and broad specialization of management study. It overlaps

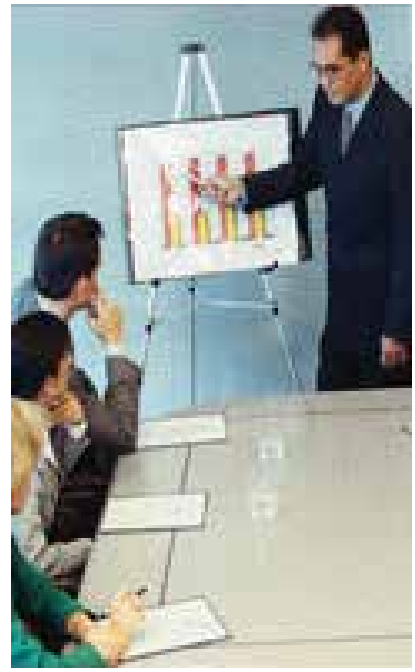

some more specialization as HRM, marketing, retail, event and IB. It involves the study and managing method of an operation or operating plant. It helps in developing the leadership quality, methodology and managerial skills in a proactive candidate. The candidate having degree in operation management can work with any organization in any field.

Event Management

Event management deals with the planning and organization of events that may include parties, ceremony, festival and competition. An event manager can work where any gathering will going to be planned. It is one of the growing and demanding specializations in management field. It not only provides the good job opportunity in an organization but also helps in

establishing a self-business.

Retail Management

At present, retail industries are growing worldwide. There are many plazas, malls, shopping world, multiplexes and shopping centers around us. It is becoming a different world of our needs. Retail management deals with the management, storing, logistics and customer satisfaction. This field is a vastly growing field and having huge employment

opportunities. Various international retail industries are demanding the qualified graduates in the same field.

https://www.sarvgyan.com/courses-after-12th

Amazing Facts

1. **Eating eight strawberries will provide you with more Vitamin C than an orange.**
2. The game Monopoly was once very popular in Cuba; however, Fidel Castro ordered that all games be destroyed.
3. Nearly half of all Americans suffer from symptoms of burnout.
4. During the era of Louis XIV, women used lemons to redden their lips.
5. The thickness of the Arctic ice sheet is on average 10 feet. There are some areas that are thick as 65 feet.
6. The adult human body requires about 88 pounds of oxygen daily.
7. The biggest pumpkin the world weighs 1,337.6 pounds.
8. The highest consumption of Pizza occurs during Super Bowl week.
9. Approximately 55% of movies released are Rated R.
10. The first toilet ever seen on television was on "Leave It To Beaver".
11. Mosquitoes have teeth.
12. To be born on Sunday was considered a sign of great sin during the Puritan times.
13. The citrus soda "7 UP" was created in 1929. The original name of the popular drink was "Bib-Label Lithiated Lemon-Lime Soda", but it got changed to "7 UP."
14. The average four year-old child asks over four hundred questions a day.
15. There is cyanide in apple pips.
16. True spiders always have organs for spinning silk known as spinnerets.
17. Great Britain has the highest consumption of ice cream than any other European nation.
18. Every continent has a city called Rome.
19. The movie "Cleopatra" cost $44 million to make in 1963. The same movie would now cost $300 million to make taking inflation into account.
20. A species of dolphin is born naturally blind in the Indus and Ganges rivers in South Asia. These dolphins have a highly sophisticated sonar system and swim on only one side of their body.
21. Kermit the Frog was named after Kermit Scott, a childhood friend of creator Jim Henson, who became a professor of philosophy at Purdue University.
22. Weatherman Willard Scott was the first Ronald McDonald.
23. Actor Sylvester Stallone once had a job as a lion cage cleaner.
24. Play-Doh was introduced in 1956 by Hasbro Inc. The only coloravailabe was an off white, and it came in one size which a one and a half pound can.
25. The USSR launched the world's first artificial satellite, Sputnik 1, in 1957.
26. The temperature of lightning bolts is sometimes hotter than the surface of the sun.
27. Chopsticks originated from China approximately 4,000 years ago.
28. The favorite honeymoon place is Hawaii.
29. The 1960 Summer Olympics were the first Olympics to be aired on television by CBS.
30. The Canadian holiday Boxing Day got its name from the custom of giving. Servants were given boxes which had money hidden inside them from their employers. The servants would have to break the box into pieces to get the money.

https://greatfacts.com

1. Founded in Italy 1472, Monte deiPaschi di Siena is the world's oldest 21st century: University; Bank; Church; or Estate Agency? **Bank**
2. A maraca, originally made from a gourd and beans, is a Latin-American: Curry; Ceremonial hat; Percussion instrument; or Infant's carriage? **Percussion instrument**
3. Joshua, Klitschko, Fury and Haye are: Atlantic flight paths; 2016 typhoons; World champion boxers; or Birth surnames of One Direction members? **World champion boxers**
4. What day is named after Biblical accounts of crowds laying cloaks and branches on Christ's path into Jerusalem? **Palm Sunday** (alternatively Yew Sunday, or Branch Sunday)
5. Galia, Honeydew, Cantaloupe and Horned are types of: Snowflake; Lizard; Melon; or Crochet hook? **Melon**
6. First adopted in 1858, the earliest standard army camouflage is (still popular internationally): Rifle Green; Gun Grey; Bark Brown; or Blood Red? **Rifle Green**
7. What gemstone is fossilized tree sap: Tiger's Eye; Topaz; Amber; or Garnet? **Amber**
8. A jointing/bordering metal strip used in stained/leaded glass windows is called a: Came; Went; Been; or Gone? **Came**
9. What's the square root of 729: 19; 27; 33; or 72? **27**
10. Derived from Greek for 'servant-woman' what term refers to a non-medical companion at birth, and increasingly death too? **Doula**
11. Smith and Wesson is a famous maker of: Earth-diggers; Pianos; Firearms; or Sugar? **Firearms**
12. The Bixa Orellana plant's annatto seeds (used for saffron/paprika substitute and cosmetic dyes) is also called the: Lipstick tree; Blusher rose; Mascara vine; or George Bush? **Lipstick tree** (and Achiote, from the Americas)
13. An aquifer is a type of: Tree; Agreement; Punctuation mark; or Water-bearing rock layer? **Water-bearing rock layer**
14. In HTML computer language an 'unordered list' equates to what in conventional writing/printing? **Bullet points** (or bullets)
15. The human ailment ankylosis is: Sprained ankle; Joint immobility; Cramp; or Paranoia? **Joint immobility** (due to fibrous growth)
16. Name the first man-made Earth satellite, launched 1957, meaning 'fellow-traveller' in Russian? **Sputnik (Sputnik 1)**
17. The old Anglicised French word 'soupçon' ('soupsonn') means a very (What?) amount: Large; Small; Fluid; or Hypothetical? **Small** (as in a tiny sample or addition, for instance of mustard to a dish)
18. What word prefixes the following to make four different terms: Gallery; Range; Star; Jacket? **Shooting**
19. Star Anise is a: Tree and spice; Arabian pattern; Parthenon mosaic; or Moon of the Sun? **Tree and spice**
20. Having an eagle emblem, name the oldest motorbike company still making bikes into the 21st century? **Moto Guzzi**
21. Amazon's streaming device launched 2014 is abbreviated to: Sparkplug; Firestick; Knobdongle; or Coldplay? **Firestick** (fully and less memorably 'Fire TV Stick')
22. The Ballon d'Or is an annual award for the world's best: Clown; Footballer; Country song; or Architect? **Footballer** (soccer player)
23. In physics/electronics, Ohm's Law is: "The current through a conductor between two points is directly proportional to the (What?) across the two points.": Temperature; Pressure; Voltage; or Mileage? **Voltage**
24. CJKV - a language system using hanzi/kanji - is an abbreviation of which four nations? (four answers required) **China Japan Korea Vietnam** (or Chinese Japanese Korean Vietnamese - hanzi/kanji are among different national terms for the symbols in such languages)
25. Which four months of the year are named after their numerical order in the old Roman calendar? (four answers required) **September, October, November, December (seven, eight, nine, ten)**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-257-general-knowledge/

आदरणीय संपादक महोदय,

सादर नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का अंक मिला। बहुत ही अच्छा लगा पढकर। इसमें राज्य शिक्षक पुरस्कार के बारे मे विस्तार से जानकारी दी गई है। वह बहुत ही उपयोगी है शिक्षकों के आगे बढ़ने के लिए। इसके लिए सुरेश राणा का धन्यवाद जिन्होंने इस पर विस्तृत जानकारी दी।

धन्यवाद सहित ।

सुदेश सहरावत
राजकीय कन्या प्राथमिक पाठशाला
शामलो कलां, जींद, हरियाणा

आदरणीय संपादक महोदय,

सादर नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का गतांक मिला। सदा की भाँति पूरा अंक ताज़गी लिए हुए था। प्रदेश में अनेक शिक्षक अपना शिक्षण-कर्म काफी निष्ठा से कर रहे हैं, लेकिन राज्य पुरस्कार के लिए केस भेजने की जानकारी न होने के कारण वे अपना केस सही तरीके से नहीं भेज पाते। इस अंक में विस्तार से इसकी जानकारी दी गई है, निश्चित तौर पर यह अध्यापकों के लिए काफी महत्त्वपूर्ण रहेगी। इस लेख के लिए लेखक को साधुवाद। माननीय प्रधानमंत्री जी का शिक्षकों के लिए संदेश काफी प्रेरणाओं से भरा था। पत्रिका के अन्य नियमित स्तंभ भी रोचकता से भरपूर थे। संपादक मंडल का धन्यवाद।

राम कुमार
कार्यक्रम अधिकारी
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

निराला हरियाणा

एक नवंबर सन छियासठ को,
बना राज्य हरियाणा।
भाषा यहाँ की हरियाणवी,
जन -जन ने ये माना।

सीधे -सादे लोग यहाँ के,
सीधा- सादा बाना ।
खीर -चूरमा, दूध-दही है,
यहाँ का मुख्य खाना ।

हरियाणा के वीर जवान,
सजग प्रहरी कहलाते ।
देश पर जब भी आए मुसीबत,
सबसे आगे पाते ।

हरियाणा के अन्नदाता भी,
दिन-रात करें खेतों में काम।
पेटभरण वो सबका करते,
देते सबको जीवन दान ।

खेलों में भी छुए गए,
यहाँ नए-नए आयाम।
ओलंपिक में मैडल लाकर,
ऊँचा किया देश का नाम।

शिक्षा के क्षेत्र में भी,
खूब किए अनुसंधान।
अधिकार मिला आगे बढ़ने का,
यहाँ सबको एक समान।

देवों की भूमि है इसकी,
दिया गया यहाँ गीता ज्ञान।
प्रेम दिखाते लोग यहाँ के,
सबका करते मान-सम्मान।

सूरज की भाँति चमके,
जग में हमारा हरियाणा।
ऊँचा सदा ही मान हो इसका,
रहे निराला हरियाणा ।

- कविता, प्राथमिक अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय-सराय अलावर्दी
गुरुग्राम, हरियाणा

RNI NO: HARBIL/2012/52385

POSTAL REGD NO: HR/AB-102/20-22

देश का अभिमान बेटियाँ

मात-पिता की शान बेटियाँ
जीवन की मुस्कान बेटियाँ

रात गमों की चीर अँधेरी
उजाले का आह्वान बेटियाँ

कंगन की झंकार बेटियाँ
जीवन की सुर ताल बेटियाँ

निराशाओं के कुहासे में
खुशियाँ भैरव गान बेटियाँ

सुख-दुःख की साथी बनकर
जीवन का हैं प्राण बेटियाँ

केसर की बगिया-सी सुन्दर
घर-बाहर की शान बेटियाँ

नन्ही भोली किंतु समय पर
दुर्गा का अवतार बेटियाँ

उजली भोर, महक चन्दन-सी
देश का अभिमान बेटियाँ

अनिता बिष्ट
डाटा एन्ट्री आपरेटर
शैक्षणिक प्रकोष्ठ
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा हरियाणा
पंचकूला

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114